17-4-84

पद्मापद्म भाग्यशाली की निशानी

पद्मापद्म भाग्यशाली बनाने वाले बापदादा अपने निरन्तर सेवाधारी बच्चों प्रति बोले:-

भाग्य विधाता बाप सभी भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा भाग्यवान आत्मा है। ब्राह्मण बनना अर्थात् भाग्यवान बनना। भगवान का बनना अर्थात् भाग्यवान बनना। भाग्यवान तो सभी हैं लेकिन बाप के बनने के बाद बाप द्वारा जो भिन्न-भिन्न खजानों का वर्सा प्राप्त होता है उस श्रेष्ठ वर्से के अधिकार को प्राप्त कर अधिकारी जीवन में चलाना वा प्राप्त हुए अधिकार को प्राप्त कर अधिकारी जीवन में चलना वा प्राप्त हुए अधिकार को सदा सहज विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करना इसमें नम्बरवार बन जाते हैं। कोई भाग्यवान रह जाते, कोई सौभाग्यवान बन जाते। कोई हजार, कोई लाख, कोई पद्मापद्म भाग्यवान बन जाते। क्योंकि खजाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि को पाना। चाहे स्वयं को सम्पन्न बनाने के कार्य में लगावें, चाहे स्वयं की सम्पन्नता द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा के कार्य में लगावें। विनाशी धन खर्चने से खुटता है। अविनाशी धन खर्चने से पद्मगुणा बढ़ता है। इसलिए कहावत है खर्चो और खाओ। जितना खर्चेंगे खायेंगे उतना शाहों का शाह बाप और मालामाल बनायेंगे। इसलिए जो प्राप्त हुए खजाने के भाग्य को सेवा अर्थ लगाते हैं वह आगे बढ़ते हैं। पद्मापद्म भाग्यवान अर्थात् हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाले। और हर संकल्प से वा बोल, कर्म सम्पर्क से पदमों को पदमगुणा सेवाधारी बन सेवा में लगाने वाले। पद्मापद्म भाग्यवान सदा फराखदिल, अविनाशी, अखण्ड, महादानी, सर्व प्रति सर्व खजाने देने वाले, दाता होंगे। समय वा प्रोग्राम प्रमाण, साधनों प्रमाण सेवाधारी नहीं। अखण्ड महादानी। वाचा नहीं, तो मंसा वा कर्मणा। सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा किसी न किसी विधि द्वारा अखुट अखण्ड खजाने के निरन्तर सेवाधारी। सेवा के भिन्न-भिन्न रुप होंगे लेकिन सेवा का लंगर सदा चलता रहेगा। जैसे निरन्तर योगी हो वैसे निरन्तर सेवाधारी। निरन्तर सेवाधारी सेवा का श्रेष्ठ फल निरन्तर खाते और खिलाते रहते। अर्थात स्वयं ही सदा का फल खाते हुए प्रत्यक्ष स्वरूप बन जाते हैं।

पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा सदा पदम आसन निवासी अर्थात् कमल पुष्प स्थिति के आसन निवासी हद के आकर्षण और हद के फल को स्वीकार करने से न्यारे और बाप तथा ब्राह्मण परिवार के, विश्व के प्यारे। ऐसी श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मा को सर्व आत्मायें सदा दिल के स्नेह के खुशी के पुष्प चढ़ाते हैं। स्वयं बापदादा भी ऐसे निरन्तर सेवाधारी पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा प्रति स्नेह के पुष्प चढ़ाते। पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा सदा अपने चमते हुए भाग्य के सितारे द्वारा अन्य आत्माओं को भी भाग्यवान बनाने की रोशनी देते। बापदादा ऐसे भाग्यवान बच्चों को देख रहे थे। चाहे दूर हैं चाहे सन्मुख हैं लेकिन सदा बाप को दिल में समाये हुए हैं। इसलिए समान सो समीप रहते। अब अपने आप से पूछो मैं कौन-सा भाग्यवान हूँ। अपने आपको तो जान सकते हैं ना। दूसरे के कहने से मानो वा न मानो लेकिन स्वयं को सब जानते हैं कि मैं कौन हूँ। समझा। फिर भी बापदादा कहते हैं भाग्यहीन से भाग्यवान तो बन गये। अनेक प्रकार के दु:ख-दर्द से तो बचेंगे। स्वर्ग के मालिक तो बनेंगे। एक है स्वर्ग में आना। दूसरा है राज्य अधिकारी बनना। आने वाले तो सब हो लेकिन कब और कहाँ आयेंगे यह स्वयं से पूछो। बापदादा के रजिस्टर में स्वर्ग में आने की लिस्ट में नाम आ गया। दुनिया से तो यह अच्छा है। लेकिन अच्छे से अच्छा नहीं है। तो क्या करेंगे? कौन-सा जोन नम्बरवन आयेगा। हर जोन की विशेषता अपनी-अपनी है।

महाराष्ट्र की विशेषता क्या है? जानते हो? महान तो है ही लेकिन विशेष विशेषता क्या गाई जाती है! महाराष्ट्र में गणपति की पूजा ज्यादा होती है। गणपति को क्या कहते हैं? विघ्न विनाशक। जो भी कार्य आरम्भ करते हैं तो पहले गणेशाए नम: कहते हैं। तो महाराष्ट्र वाले क्या करेंगे? हर महान कार्य में श्री गणेश करेंगे ना। महाराष्ट्र अर्थात् सदा विघ्न विनाशक राष्ट्र। तो सदा विघ्न विनाशक बन स्वयं और अन्य के प्रति इसी महानता को दिखायेंगे! महाराष्ट्र में विघ्न नहीं होना चाहिए। सब विघ्न विनाशक हो जाएँ। आया और दूर से नमस्कार किया। तो ऐसा विघ्न विनाशक ग्रुप लाया है ना! महाराष्ट्र को सदा अपनी इस महानता को विश्व के आगे दिखाना है। विघ्न से डरने वाले तो नहीं हो ना। विघ्न विनाशक चैलेंज करने वाले हैं। वैसे भी महाराष्ट्र में बहादुरी दिखाते हैं। अच्छा!

यू.पी. वाले क्या कमाल दिखायेंगे? यू.पी. की विशेषता क्या है? तीर्थ भी बहुत हैं, नदियाँ भी बहुत हैं, जगतगुरु भी वहाँ ही हैं। चार कोने में चार जगतगुरु हैं ना। महामण्डलेश्वर यू.पी. में ज्यादा हैं। हरि का द्वार यू.पी. का विशेष है। तो हरि का द्वार अर्थात् हरि के पास जाने का द्वार बताने वाले सेवाधारी यू.पी. में ज्यादा होने चाहिए। जैसे तीर्थ स्थान के कारण यू.पी. में पण्डे बहुत हैं। वह तो खाने-पीने वाले हैं लेकिन यह है सच्चा रास्ता बताने वाले रुहानी सेवाधारी पण्डे। जो बाप से मिलन मनाने वाले हैं। बाप के समीप लाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव सो पण्डे यू.पी. में विशेष हैं? यू.पी. को यह विशेष पाण्डव सो पण्डे का प्रत्यक्ष रुप दिखाना है। समझा!

मैसूर की विशेषता क्या है? वहाँ चन्दन भी है और विशेष गार्डन भी हैं। तो कर्नाटक वालों को विशेष सदा रुहानी गुलाब, सदा खुशबूदार चन्दन वन विश्व में चन्दन की खुशबू कहो, अथवा रुहानी गुलाब की खुशबू कहो, विश्व को गार्डन बनाना है। और विश्व में

चन्दन की खुशबू फैलानी है। चन्दन का तिलक दे खुशबूदार और शीतल बनाना है। चन्दन शीतल भी होता है। तो सबसे ज्यादा रुहानी गुलाब कर्नाटक से निकलेंगे ना। यह प्रत्यक्ष प्रमाण लाना है।

अभी सबको अपनी-अपनी विशेषता का प्रत्यक्ष रुप दिखाना है। सबसे खिले हुए खुशबूदार रुहानी गुलाब लाने पड़ें। लाये भी हैं, कुछ-कुछ लाये हैं लेकिन गुलदस्ता नहीं लाया है। अच्छा! विदेश की महिमा तो बहुत सुनाई है। विदेश की विशेषता है – डिटैच भी बहुत जोर से होंगे तो अटैच भी जोर से होंगे। बापदादा विदेशी बच्चों का न्यारा और प्यारापन देख हर्षित होते हैं। वह जीवन तो बीत गई। जितना फँसे हुए थे उतने ही अब न्यारे भी हो गये। इसलिए विदेश का न्यारा और प्यारापन बापदादा को भी प्यारा लगता है। इसलिए विशेष बापदादा भी यादप्यार दे रहे हैं। अपनी विशेषता में समा गये हो! ऐसे न्यारे और प्यारे हो ना। अटैचमेन्ट तो नहीं है ना। फिर भी देखो विदेशी मेहमान होकर घर में आये हैं तो मेहमानों को सदा आगे किया जाता है। इसलिए भारतवासियों को विदेशियों को देख विशेष खुशी होती है। कई ऐसे गेस्ट होते जो होस्ट बन वैठ जाते हैं। विदेशियों की सदा यही चाल रही है। गेस्ट बन आते और होस्ट बन बैठ जाते। फिर भी अनेक दिवारों को तोड़कर बाप के पास सो आपके पास आये हैं। तो ''पहले आप'' तो कहेंगे ना। ऐसे तो भारत की विशेषता अपनी विदेशी की अपनी है। अच्छा–

८४ घण्टों वाली देवियाँ मशहूर हैं। तो अभी ८४ में घण्टा बजायेंगे वा और भी अभी इन्तजार करें। विदेश में तो डर से जी रहे हैं। तो कब घण्टे बजायेंगे। विदेशी बजावें वा देश बजाये। ८४ माना चारों ओर के घण्टे बजें। जब समाप्ति में आरती करते हैं तो जोर-जोर से घण्टे बजाते हैं ना। तब समाप्ति होती है। आरती का होना माना समाप्ति होना। तो अब क्या करेंगे? अच्छा–

सभी पदम आसनधारी पद्मापद्म भाग्यवान, सदा हर सेकण्ड, हर संकल्प में निरन्तर सेवाधारी, सदा फराखदिल बन सर्व खजानों को देने वाले, मास्टर दाता सदा स्वयं की सम्पन्नता द्वारा औरों को भी सम्पन्न बनाने वाले, श्रेष्ठ भाग्य अधिकारी, सदा श्रेष्ठ सबूत देने वाले सपूत बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पंजाब निवासियों प्रति:- बाप बैठा है इसलिए सोचने की जरुरत नहीं है, जो होगा वह कल्याणकारी है। आप तो सबके हो। न हिन्दू हो न सिक्ख हो। बाप के हो तो सबके हो। पाकिस्तान में भी यही कहते थे ना – आप तो अल्लाह के बन्दे हो, आपको किसी बात से कनेक्शन नहीं। इसलिए आप ईश्वर के हो, और किसी के नहीं। क्या भी हो लेकिन डरने वाले नहीं। कितनी भी आग लगे बिल्ली के पूँगरे तो सेफ रहेंगे लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेफ रहेंगे। ऐसे नहीं, कहे मैं बाप की हूँ और याद करे दूसरो को। ऐसे को मदद नहीं मिलेगी। डरो नहीं, घबराओ नहीं, आगे बढो। याद की यात्रा में, धारणाओं में, पढ़ाई में सब सबजेक्ट से आगे बढ़ो। जितना आगे बढेंगे उतना सहज ही प्राप्ति करते रहेंगे।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. सभी अपने को इस सृष्टि ड्रामा के अन्दर विशेष पार्टधारी समझते हो? कल्प पहले वाले अपने चित्र अभी देख रहे हो! यही ब्राह्मण जीवन का वन्डर है। सदा इसी विशेषता को याद करो कि क्या थे और क्या बन गये। कौड़ी से हीरे तुल्य बन गये। दु:खी संसार से सुखी संसार में आ गये। आप सब इस ड्रामा के हीरो हीरोइन एक्टर हो। एक-एक ब्रह्माकुमार कुमारी बाप का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी हो। भगवान का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी कितने श्रेष्ठ हुए! तो सदा इसी कार्य के निमित्त अवतरित हुए हैं। ऊपर से नीचे आये हैं यह सन्देश देने – यही स्मृति खुशी दिलाने वाली हैं। बस अपना यही आक्यूपेशन सदा याद रखो कि खुशियों की खान के मालिक हैं। यही आपका टाइटिल है।

२. सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें अनुभव करते हो? सच्चे ब्राह्मण अर्थात् सदा सत्य बाप का परिचय देने वाले। ब्राह्मणों का काम है कथा करना, तुम कथा नहीं करते लेकिन सत्य परिचय सुनाते हो। ऐसे सत्य बाप का सत्य परिचय देने वाले, ब्राह्मण आत्मायें हैं, यही नशा रहे। ब्राह्मण देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं। इसलिए ब्राह्मणों का स्थान चोटी पर दिखाते हैं। चोटी वाले ब्राह्मण अर्थात् ऊंची स्थिति में रहने वाले। ऊंचा रहने से नीचे सब छोटे होंगे। कोई भी बात बड़ी नहीं लगेगी। ऊपर बैठकर नीचे की चीज देखो तो छोटी लगेगी। कभी कोई समस्या बड़ी लगती तो उसका कारण नीचे बैठकर देखते हो। ऊपर से देखो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तो सदा याद रखना चोटी वाले ब्राह्मण हैं – इसमें बड़ी समस्या भी सेकण्ड में छोटी हो जायेगी। समस्या से घबराने वाले नहीं लेकिन पार करने वाले समस्या का समाधान करने वाले।

आज सवेरे (१८-४-८४) अमृतवेले भुवनेश्वर के एक भाई ने हार्टफेल होने से अपना पुराना शरीर मधुबन में छोड़ा उस समय अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए महावाक्य:-

सभी ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना। कोई भी सीन जो भी ड्रामा में होती है उसको कहेंगे कल्याणकारी। नथिंग न्यू। (उनकी लौकिक भाभी से) क्या सोच रही हो? साक्षीपन की सीट पर बैठ सब दृश्य देखने से अपना भी कल्याण है और उस आत्मा का भी कल्याण है। यह तो समझती हो ना! याद में शक्ति रुप हो ना। शक्ति सदा विजयी होती है। विजयी शक्ति रुप बन सारा पार्ट बजाने वाली। यह भी पार्ट है। पार्ट बजाते हुए कभी भी और कोई संकल्प नहीं करना। हर आत्मा का

अपना-अपना पार्ट है। अभी उस आत्मा को शान्ति और शक्ति का सहयोग दो। इतने सारे दैवी परिवार का सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसलिए कोई सोचने की बात नहीं है। महान तीर्थ स्थान है ना! महान आत्मा है, महान तीर्थ है। सदा महानता ही सोचो। सभी याद में बैठे हो ना! एक लाडला बच्चा, अपने इस पुराने शरीर का हिसाब पूरा कर अपने नये शरीर की तैयारी में चला। इसलिए अभी सभी उस भाग्यवान आत्मा को शान्ति, शक्ति का सहयोग दो। यही विशेष सेवा है। क्यों, क्या में नहीं जाना लेकिन स्वयं भी शक्ति स्वरुप हो, विश्व में शान्ति की किरणें फैलाओ। श्रेष्ठ आत्मा है, कमाई करने वाली आत्मा है। इसलिए कोई सोचने की बात नहीं। समझा!

19-4-84

भावुक आत्मा तथा ज्ञानी आत्मा के लक्षण

श्रेष्ठ अधिकार को देने वाले, विजयी रत्न बनाने वाले बापदादा बोले:-

आज बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि कौन से बच्चे भावना से बाप के पास पहुँचे हैं, कौन से बच्चे पहचान कर पाने अर्थात् बनने के लिए पहुँचे हैं। दोनों प्रकार के बच्चे बाप के घर में पहुँचे। भावना वाले भावना का फल यथा शक्ति खुशी, शान्ति, ज्ञान वा प्रेम का फल प्राप्त कर इसी में खुश हो जाते हैं। फिर भी भक्ति की भावना और अब बाप के परिचय से बाप वा परिवार के प्रति भावना इसमें अन्तर है। भक्ति की भावना अन्धश्रद्धा की भावना है। इनडायरेक्ट मिलने की भावना, अल्पकाल के स्वार्थ की भावना है। वर्तमान समय ज्ञान के आधार पर जो बच्चों की भावना है वह भक्ति मार्ग से अति श्रेष्ठ है। कयोंकि इनडायरेक्ट देव आत्माओं द्वारा नहीं है डायरेक्ट बाप के प्रति भावना है। पहचान है लेकिन भावना पूर्वक पहचान और ज्ञान द्वारा पहचान इसमें अन्तर है। ज्ञान द्वारा पहचान अर्थात् बाप जो है जैसा है, मैं भी जो हूँ जैसा हूँ उस विधि पूर्वक जानना अर्थात् बाप समान बनना। जाना तो सभी ने है लेकिन भावना पूर्वक वा ज्ञान की विधि पूर्वक, इस अन्तर को जानना पड़े। तो आज बापदादा कई बच्चों की भावना देख रहे हैं। भावना द्वारा भी बाप को पहचानने से वर्सा तो प्राप्त कर ही लेते हैं। लेकिन सम्पूर्ण वर्से के अधिकारी और वर्से के अधिकारी यह अन्तर हो जाता है। स्वर्ग का भाग्य वा जीवन मुक्ति का अधिकार भावना वालों को और ज्ञान वालों को मिलता दोनों को है। सिर्फ पद की प्राप्ति में अन्तर हो जाता है। बाबा शब्द दोनों ही कहते हैं और खुशी से कहते हैं इसलिबए बाबा कहने और समझने का फल वर्से की प्राप्ति तो होनी ही है। जीवनमुक्ति के अधिकार का हकदार तो बन जाते हैं लेकिन अष्ट रत्न, १०८ विजयी रत्न, १६ हजार और फिर ९ लाख। कितना अन्तर हो गया। माला १६ हजार की भी है और १०८ की भी है। १०८ में ८ विशेष भी हैं। माला के मणके तो सभी बनते हैं। कहेंगे तो दोनों को मणके ना! १६ हजार की माला का मणका भी खुशी और फखुर से कहेगा कि मेरा बाबा और मेरा राज्य। राज्य पद में राज्य तख्त के अधिकारी और राज्य घराने के अधिकारी और राज्य घराने के सम्पर्क में आने के अधिकारी, यह अन्तर हो जाता है।

भावुक आत्मायें और ज्ञानी तू आत्मायें नशा दोनों को रहता है। बहुत अच्छी प्रभु प्रेम की बातें सुनाते हैं। प्रेम स्वरुप में दुनिया की सुधबुध भी भूल जाते हैं। मेरा तो एक बाप इस लगन के गीत भी अच्छे गाते हैं लेकिन शक्ति रूप नहीं होते हैं। खुशी में भी बहुत देखेंगे लेकिन अगर छोटा-सा माया का विघ्न आया तो भावुक आत्मायें घबरायेंगे भी बहुत जल्दी। क्योंकि ज्ञान की शक्ति कम होती है। अभी-अभी देखेंगे बहुत मौज में बाप के गीत गा रहे हैं और अभी-अभी माया का छोटा सा वार भी खुशी के गीत के बजाए क्या करुँ, कैसे करुँ, क्या होगा, कैसे होगा! ऐसे क्या-क्या के गीत गाने में भी कम नहीं होते। ज्ञानी तू आत्मायें सदा स्वयं को बाप के साथ रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान समझने से माया को पार कर लेते हैं। क्या, क्यों के गीत नहीं गाते। भावुक आत्मायें सिर्फ प्रेम की शक्ति से आगे बढ़ते रहते हैं। माया से समाना करने की शक्ति नहीं होती। ज्ञानी तू आत्मा समान बनने के लक्ष्य से सर्व शक्तियों का अनुभव कर सामना कर सकते हैं। अब अपने आप से पूछो कि मैं कौन! भावुक आत्मा हैं या ज्ञानी तू आत्मा हूँ। बाप तो भावना वालों को भी देख *खुश होते हैं। मेरा बाबा कहने से अधिकारी तो हो ही गये ना। और अधिकार लेने के भी हकदार हो ही गये। पूरा लेना वा थोड़ा लेना। वह पुरुषार्थ प्रमाण जितना झोली भरने चाहे उतनी भर सकते हैं। क्योंकि मेरा बाबा कहा तो वह चाबी तो लगा ही दी ना। और कोई चाबी नहीं है क्योंकि बापदादा सागर है ना। अखुट है, बेहद है। लेने वाले थक जाते। देने वाला नहीं थकता क्योंकि उसको मेहनत ही क्या करनी पड़ती। दृष्टि दी और अधिकार दिया। मेहनत लेने वालों को भी नहीं है सिर्फ अल-बेलेपन के कारण गँवा देते हैं। और फिर अपनी कमजोरी के कारण गँवा कर फिर पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। गँवाना पाना, पाना गँवाना इस मेहनत के कारण थक जाते हैं। खबरदार होशियार हैं तो सदा प्राप्ति स्वरुप हैं। जैसे सतयुग में दासियाँ सदा आगे-पीछो सेवा के लिए साथ रहती हैं ऐसे ज्ञानी तू आत्मा बाप समान श्रेष्ठ आत्मा के अब भी सर्व शक्ति, सर्व गुण सेवाधारी के रुप में सदा साथ निभाते हैं। जिस शक्ति का आह्वान करो, जिस भी गुण का आह्वान करो जी हाजिर। ऐसे स्वराज्य अधिकारी विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। तो मेहनत को नहीं लगेगी ना। हर शक्ति, हर गुण सदा विजयी हैं ही, ऐसा अनुभव कराते हैं। जैसे ड्रामा करके दिखाते हो ना। रावण अपने साथियों को ललकार करता और ब्राह्मण आत्मा, स्वराज्य अधिकारी आत्मा अपने

शक्तियों और गुणों को ललकार करती। तो ऐसे स्वराज्य अधिकारी बने हो? वा समय पर यह शक्तियाँ कार्य में नहीं ला सकतो हो। कमजोर राजा का कोई नहीं मानता। राजा को मानना पड़ता प्रजा का। बहादुर राज सभी को अपने आर्डर से चलाते और राज्य प्राप्त करते हैं। तो सहज को मुश्किल बनाना और फिर थक जाना यह अलबेलेपन की निशानी है। नाम राजा और आर्डर में कोई नहीं। इसको क्या कहा जायेगा। कई कहते हैं ना मैंने समझा भी कि सहन शक्ति होनी चाहिए लेकिन पीछे याद आया। उस समय सोचते भी सहन शक्ति से कार्य नहीं ले सकते। इसका मतलब बुलाया अभी और अया कल। तो आर्डर में हुआ! हो गया माना अपनी शक्ति आर्डर में नहीं है। सेवाधारी समय पर सेवा न करें तो ऐसे सेवाधारी को क्या कहेंगे? तो सदा स्वराज्य अधिकारी बन सर्व शक्तियों को, गुणों को, स्प प्रति और सर्व के प्रति सेवा में लगाओ। समझा। सिर्फ भावुक नहीं बनो। शक्तिशाली बनो। अच्छा– वैरायटी प्रकार की आत्माओं का मेला देख खुश हो रहे हो ना! मधुबन वाले कितने मेले देखते हैं। कितने वैरायटी ग्रुप्स आते हैं। बापदादा भी वैरायटी फुलवाड़ी को देख हर्षित होते हैं। भले आये। शिव की बारात का गायन जो है वह देख रहे हो ना! बाबा-बाबा कहते सब चल पड़े तो हैं ना। मधुबन तो पहुँच गये। अब सम्पूर्ण मंजिल पर पहुँचना है। अच्छा–

सदा श्रेष्ठ अधिकार को पाने वाले विजयी आत्माओं को, सदा अपने अधिकार से सर्व शक्तियों द्वारा सेवा करने वाले शक्तिशाली आत्माओं को, सदा राज्य तख्त अधिकारी बनने वाले अधिकारी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अलग-अलग पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकत

पंजाब जोन से:- सभी पंजाब निवासी महावीर हो ना! डरने वाले तो नहीं? किसी भी बात का भय तो नहीं है! सबसे बड़ा भय होता है मृत्यु से। आप सब तो हो ही मरे हुए। मरे हुए को मरने का क्या डर। मृत्यु से डर तब लगता है जब सोचते हैं, अभी यह करना है, यह करें और वह पूर्ति नहीं होती है तो मृत्यु से भय होता है। आप तो सब कार्य पूरा कर एवररेडी हो। यह पुराना चोला छोड़ने के लिए एवररेडी हो ना। इसलिए डर नहीं। और भी जो भयभीत आत्मायें हैं उन्हों को भी शक्तिशली बनाने वाले, दुख के समय पर सुख देने वाली आत्मायें हो। सुखदाता के बच्चे हो। जेसे अन्धियारे में अन्धकार का चिराग होता है तो रोशनी हो जाती है। ऐसे दुख के वातावरण में सुख देने वाली आप श्रेष्ठ आत्मायें हों। तो सदा यह सुख देने की श्रेष्ठ भावना रहती है। सदा सुख देना है, शान्ति देनी है। शान्तिदाता के बच्चे शान्ति देवा हो। तो शान्ति देवा कौन है? अकेला बाप नहीं, आप सब भी हो। तो शान्ति देने वाले शान्ति देवा – शान्ति देने का कार्य कर रहे हो ना! लोग पूछते हैं – आप लोग क्या सेवा करते हो? तो आप सभी को यही कहो कि इस समय जिस विशेष बात की आवश्यकता है वह कार्य हम कर रहे हैं। अच्छा, कपड़ा भी देंगे, अनाज भी दे देंगे, लेकिन सबसे आवश्यक चीज हैं शान्ति। तो जो सबके लिए आवश्यक चीज है वह हम दे रहें हें। इससे बड़ी सेवा और क्या है। मन शानत है तो धन भी काम में आता है। मन शान्त नहीं तो धन की शक्ति भी परेशान करती है। अभी ऐसे शान्ति की शक्तिशाली लहर फौलाओ जो सभी अनुभव करें कि सारे देश के अन्दर यह शान्ति का स्थान है। एक-दो से सुने और अनुभव करने के लिए आवें कि दो घड़ी भी जाने से यहाँ बहुत शान्ति मिलती है। ऐसा आवाज फैले। जैसे उन्होंमे आवाज फैल गया है कि अशान्ति का स्थान यह गुरुद्वारा ही बन चुका है। ऐसे शान्ति कोना कौन सा है, यही सेवा स्थान है, यह आवाज फैलना चाहिए। कितनी भी अशान्त आत्मा हो। जैसे रोगी हास्पिटल में पहुँच जाता है ऐसे यह समझें कि अशान्ति के समय इस शान्ति के स्थान पर ही जाना चाहिए। ऐसी लहर फैलाओ। यह कैसे फैलेगी? इसके लिए एक-दो आत्माओं को भी बुलाकर अनुभव कराओ। एक से एक, एक से एक ऐसे फैलता जायेगा। जो अशान्त हैं उन्हों को खास बुलाकर भी शान्ति का अनुभव कराओ। जो भी सम्पर्क में आयें उन्हों को यह शन्देश दो कि शान्ति का अनुभव करो। पंजाब वालों को विशेष यह सेवा करनी चाहिए। अभी आवाज बुलन्द करने का चांस है। अभी भटक रहे हैं। कोई स्थान चाहिए। कौन-सा है वह परिचय नहीं हे, ढूँढ रहे हैं। एक ठिकाने से तो भटक गये, समझ गये हैं कि यह ठिकाना नहीं है। ऐसी भटकती हुई आत्माओं को अभी सहज ठिकाना नहीं दे सकते हो। ऐसी सेवा करो। करफ्यू हो कुछ भी हो, सम्पर्क में तो आते हो ना। सम्पर्क वालों को अनुभव कराओ तो ऐसी आत्मायें आवाज फैलायेंगी। उनहें एक दो घण्टा भी योग शिविर कराओ। अगर थोड़ा भी शान्ति का अनुभव किया तो बहुत खुश होंगे, शुक्रिया मानेंगे। जब लक्ष्य होता है कि हमको करना है तो रास्ता भी मिल जाता है। तो ऐसा नाम बाला करके दिखाओ। जितना पंजाब की धरनी सख्त है उतनी नर्म कर सकते हो।

२. सदा अपने को फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट अनुभव करते हो? इस संगमयुग का अन्तिम स्वरुप फरिश्ता है ना। ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति है ही फरश्ता जीवन। फरिश्ता अर्थात् जिसका कोई देह और देह के सम्बन्ध में रिश्ता नहीं। देह और देह के सम्बन्ध, सबसे रिश्ता समाप्त हुआ या थोड़ा-सा अटका हुआ है? अगर थोड़ी-सी सूक्ष्म लगाव की रस्सी होंगी तो उड़ नहीं सकेंगे। नीचे आ जायेंगे। इसलिए फरिश्ता अर्थात् कोई भी पुराना रिश्ता नहीं। जब जीवन ही नया है तो सब कुछ नया होगा। संकल्प नया, सम्बन्ध नया। आक्यूपेशन नया। सब नया होगा। अभी पुरानी जीवन स्वप्न में भी स्मृति में नहीं आ सकती। अगर थोड़ाभी देह भान में आते तो भी रिश्ता है तब आते हो। अगर रिश्ता नहीं है तो बुद्धि जा नहीं सकती। विश्व की इतनी आत्मायें हैं उन्हों से रिश्ता नहीं तो याद नहीं आती हैं ना। याद वह आते हैं जिससे रिश्ता है। तो देह का भाना आना अर्थात् देह का रिश्ता है। अगर देह के साथ जरा-सा

लगाव रहा तो उड़ेंगे कैसे! बोझ वाली चीज़ को ऊपर कितना भी फेंको नीचे आ जायेगी। तो फरिश्ता माना हल्का, कोई बोझ नहीं। मरजीवा बनना अर्थात् बोझ से मुक्त होना। अगर थोड़ा भी कुछ रह गया तो जल्दी-जल्दी खत्म करो नहीं तो जब समय की सीटी बजेगी तो सब उड़ने लगेंगे और बोझ वाले नीचे रह जायेंगे। बोझ वाले उड़ने वालों को देखने वाले हो जायेंगे।

तो यह चेक करना कि कोई सूक्ष्म रस्सी भी रह तो नहीं गई है। समझा। तो आज का विशेष वरदान याद रखना कि निर्बन्धन फरिश्ता आत्मायें हैं। बन्धनमुक्त आत्मायें हैं। फरिश्ता शब्द कभी नहीं भूलना। फरिश्ता समझने से उड़ जायेंगे। वरदाता का वरदान याद रखेंगे तो सदा मालामाल रहेंगे। अच्छा–

३. सदा अपने को शान्ति का सन्देश देने वाले शान्ति का पैगाम देने वाले सन्देशी समझते हो? ब्राह्मण जीवन का कार्य है सन्देश देना। कभी इस कार्य को भूलते तो नहीं हो? रोज़ चेक करो कि मुझ श्रेष्ट आत्मा का श्रेष्ट कार्य है वह कहाँ तक किया! कितनों को सन्देश दिया। कितनों को शान्ति का दान दिया। सन्देश देने वाले महादानी वरदानी आत्मायें हो। कितने टाइटल हैं आपके? आज की दुनिया में कितने भी बड़े ते बड़े टाइटल हों आपके आगे सब छोटे हैं। वह टाइटल देने वाली आत्मायें हैं लेकिन अब बाप बच्चों को टाइटल देते हैं। तो अपने भिन्न-भिन्न टाइटल्स को स्मृति में रख उसी खुशी, उसी सेवा में सदा रहो। टाइटल की स्मृति से सेवा स्वत: स्मृति में आयेगी। अच्छा–

22-4-84

विचित्र बाप द्वारा विचित्र पढ़ाई तथा विचित्र प्राप्ति

श्रेष्ठ प्राप्ति के अधिकारी बनाने वाले सत बाप, सत शिक्षक, ज्ञान स्वरुप बच्चों प्रति बोले:-

आज रुहानी बाप अपने रुहानी बच्चों से मिलने आये हैं। रुहानी बाप हर-एक रुह को देख रहे हैं कि हर-एक में कितनी रुहानी शक्ति भरी हुई है। हर एक आत्मा कितनी खुशी स्वरुप बनी है। रुहानी बाप अविनाशी खुशी का खजाना बच्चों को जन्म-सिद्ध अधिकार में दिया हुआ देख रहे हैं कि हरेक ने अपना वर्सा, अधिकार कहाँ तक जीवन में प्राप्त किया है। खजाने के बालक सो मालिक बने हैं! बाप दाता है, सभी बच्चों को पूरा ही अधिकार देते हैं। लेकिर हर एक बच्चे अपनी-अपनी धारण की शक्ति प्रमाण अधिकारी बनता है। बाप का तो सभी बच्चों के प्रति एक ही शुभ संकल्प है कि हर एक आत्मा रुपी बच्चा सदा सर्व खजानों से सम्पन्न अनेक जन्मों के लिए सम्पूर्ण वर्से के अधिकारी बने जाएं। ऐसे प्राप्त करने के उमंग उत्साह में रहने वाले बच्चों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। हर एक छोटा-बड़ा, बच्चा युवा वा वृद्ध मीठी-मीठी मातायें, अनपढ़ या पढ़े हुए, शरीर से निर्बल फिर भी आत्मायें कितनी बलवान हैं! एक परमात्मा की लगन कितनी है! अनुभव है कि हमने परमात्मा बाप को जाना, सब कुछ जाना। बापदादा भी ऐसे अनुभवी आत्माओं को सदा यही वरदान देते हैं – हे लगन में मगन रहने वाले बच्चे, सदा याद में जीते रहो। सदा सुख शान्ति की प्राप्ति में पलते रहो। अविनाशी खुशी के झूले में झूलते रहो। और विश्व की सभी आत्माओं रुपी अपने रुहानी भाईयों को सुख शान्ति का सहज साधन सुनाते हुए, उन्हों को भी रुहानी बाप के रुहानी वर्से के अधिकारी बनाओ। यही एक पाठ सभी को पढ़ाओ। हम सब आत्मायें एक बापके हैं। एक ही परिवार के हैं, एक ही घरके हैं। एक ही सृष्टि मंच पर पार्ट बजाने वाले हैं। हम सर्व आत्माओं का एक ही स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है। बइ इसी पाठ से स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन कर रहे हो और निश्चित होना ही है। सहज बात है ना। मुश्किल तो नहीं। अनपढ़ भी इस पाठ से नालेजफुल बन गये हो। क्योंकि रचयिता बीज को जान रचयिता द्वारा रचना को स्वत: ही जान जाते। सभी नालेजफुल हो ना! सारी पढ़ाई रचता और रचना की सिर्फ तीन शब्दों में पढ़ ली है। आत्मा परमात्मा और सृष्टि चक्र। इन तीनों शब्दों से क्या बन गये हो! कौन-सा सर्टीफिकेट मिला है? बी.ए., एम.ए. का सर्टिफिकेट तो नहीं मिला। लेकिन त्रिकालदर्शी, ज्ञान स्वरुप यह टाइटल तो मिले हैं ना। और सोर्स आफ इनका क्या हुआ? क्या मिला? सत शिक्षक द्वारा अविनाशी जन्म-जन्म सर्व प्राप्ति की गैरन्टी मिली है। वैसे टीचर गैरन्टी नहीं देता कि सदा कमाते रहेंगे वा धनवान रहेंगे। वह सिर्फ पढ़ा के योग्य बना देते हैं। तुम बच्चों को वा गाडली स्टूडेन्ट को बाप शिक्षक द्वारा, वर्तमान के अधार से २१ जन्म सतयुग त्रेता के सदा ही सुख शान्ति, सम्पत्ति, आनन्द, प्रेम, सुखदाई परिवार मिलना ही है। मिलेगा नहीं। मिलना ही है। यह गैरन्टी है। क्योंकि अविनाशी बाप है, अविनाशी शिक्षक है। तो अविनाशी द्वारा प्राप्ति भी अविनाशी है। यही खुशी के गीत गाते हो ना कि हमें सत बाप, सत शिक्षक द्वारा सर्व प्राप्ति का अधिकार मिल गया। इसी को ही कहा जाता है विचित्र बाप, विचित्र स्टूडेन्टस और विचित्र पढ़ाई वा विचित्र प्राप्ति। जो कोई भी कितना भी पढ़ा हुआ हो लेकिन इस विचित्र बाप और शिक्षक की पढ़ाई वा वर्से को जान नहीं सकते। चित्र निकाल नहीं सकते। जाने भी कैसे। इतना बड़ा ऊंचे ते ऊंचा बाप शिक्षक और पढ़ाता कहाँ और किसको हैं! कितने साधारण हैं! मानव से देवता बनाने की, सदा के लिए चरित्रवान बनाने की पढ़ाई है और पढ़ने वाले कौन हैं? जिसको कोई नहीं पढ़ा सकते उनको बाप पढ़ाते हैं। जिसको दुनिया पढ़ा सकती, बाप भी उन्हों को ही पढ़ावे तो क्या बड़ी बात हुई। ना उम्मीद आत्माओं को ही उम्मीदवार बनाते हैं। असम्भव को सम्भव कराते हैं। इसलिए ही गायन है तुम्हारी गत मत तुम ही जानो। बापदादा ऐसे नाउम्मीद से उम्मीदवार बनने वाले बच्चों को देख खुश होते हैं। भले आये। बाप के घर के श्रृंगार भले पधारे।

अच्छा–

सदा स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति के अधिकारी अनुभव करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, एक जन्म में अनेक जन्मों की प्राप्ति कराने वाले ज्ञान स्वरुप बच्चों को, सदा एक पाठ पढ़ने और पढ़ने वाले श्रेष्ठ बच्चों को, सदा वरदाता बाप के वरदानों में पलने वाले भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

बापदादा के सम्मुख सिरोही के इनकम टैक्स ऑफीसर बैठे हैं, उनके प्रति उच्चारे हुए मधुर महावाक्य

यह तो समझते हो ना कि अपने घर में आये हैं? यह घर किसका है? परमात्मा का घर सबका घर हुआ ना? तो आपका भी घर हुआ ना? घर में आये यह तो बहुत अच्छा किया – अब और अच्छे ते अच्छा क्या करेंगे? अच्छे ते अच्छा करना और ऊंचे ते ऊंचा बनना यह तो जीवन का लक्ष्य होता ही है। अब अच्छे ते अच्छा क्या करना है? जो पाठ अभी सुनाया – वह एक ही पाठ पक्का कर लिया तो इस एक पाठ में सब पढ़ाई समाई हुई है। यह वन्डरफुल विश्व विद्यालय है, देखने में घर भी है लेकिन बाप ही सत शिक्षक है, घर भी है और विद्यालय भी है। इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं – कि यह घर है या विद्यालय है। लेकिन घर भी है और विद्यालय भी है क्योंकि जो सबसे श्रेष्ठ पाठ है, पह पढ़ाया जाता है। कालेज में वा स्कूल में पढ़ाने का लक्ष्य क्या है? चरित्रवान बने, कमाई योग्य बने, परिवार को अच्छी तरह से पालना करने वाला बने, यही लक्ष्य है ना। तो यहाँ यह सब लक्ष्य पूरा हो ही जाता है। एक-एक चरित्रवान बन जाता है१

भारत देश के नेतायें क्या चाहते हैं? भारत का बापू जी क्या चाहता था? यही चाहता था ना – कि भारत लाइट हाउस बने। भारत दुनिया के आध्यात्मिक शक्ति का केन्द्र बने। वही कार्य यहाँ गुप्त रुप से हो रहा है। अगर एक भी राम सीता समान बन जाए तो एक राम सीता के कारण रामराज्य हुआ और इतने सब राम सीता के समान बन जाएं तो क्या होगा? तो यह पाठ मुश्किल नहीं है, बहुत सहज है। इस पाठ को पक्का करेंगे तो आप भी सत टीचर द्वारा रुहानी सर्टीफिकेट भी लेंगे और फिर गैरन्टी भी ले लेंगे – सोर्स आफ इनकम की। बाकी वन्डरफुल जरुर है। दादा भी, परदादा भी यहाँ ही पढ़ात है तो पोत्रा धोत्रा भी यहाँ भी पढ़ता है। एक ही क्लास में दोनों ही पढ़ते हैं क्यांकि आत्माओं को यहाँ पढ़ाया जाता है, शरीर को नहीं देखा जाता है। आत्मा को पढ़ाया जाता है – चाहे पांच साल का बच्चा है, वह भी यह पाठ तो पढ़ सकता है ना। और बच्चा ज्यादा काम कर सकता है। और जो बुजुर्ग हो गये उन्हों के जिए भी यह पाठ जरुरी है, पहीं तो जीवन से निराश हो जाते हैं। अनपढ़ मातायें उन्हों को भी श्रेष्ठ जीवन तो चाहिए ना। इसलिए सत शिक्षक सभी को पढ़ाता है। चाहे कितना भी वी.वी.वी.आई.पी. हो लेकिन सत शिक्षक के लिए तो सब स्टूडेन्ट हैं। यह एक ही पाठ सबको पढ़ाता है। तो क्या करेंगे? पाठ पढ़ेंगे ना, फायदा आपको ही होगा। जो करेगा वो पायेगा। जितना करेंगे उतना फायदा होगा – क्योंकि यहाँ एक का पदमगुणा होकर मिलता है। वहाँ विनाशी में ऐसा नहीं है। अविनाशी पढ़ाई में एक का पदम हो जायेगा क्योंकि दाता है ना। अच्छा–

राजस्थान जोन से बापदादा की मुलाकात:-

राजस्थान जोन की विशेषता क्या है? राजस्थान में ही मुख्य केन्द्र है। तो जैसे जाने की विशेषता है वैसे राजस्थान निवासियों की भी विशेषता होगी ना। अभी राजस्थान में कोई विशेष हीरे निकलने हैं या आप ही विशेष हीरे हो? आप तो सबसे विशेष हो ही लेकिन सेवा के क्षेत्र में दुनिया की नजरों में जो विशेष्ज्ञ हैं, उन्हों को भी सेवा के निमित्त बनाना है। ऐसी सेवा की है? राजस्थान को सबसे नम्बरवन होना चाहिए। संख्या में, क्वालिटी में, सेवा की विशेषता में, सबमें नम्बरवन। मुख्य केन्द्र नम्बरवन तो है ही लेकिन उसका प्रभाव सारे राजस्थान में होना चाहिएण्। अभी नम्बरवन संख्या में महाराष्ट्र, गुजरात को गिनती करते हैं। अभी यह गिनती करें कि सबसे नम्बरवन राजस्थान है। अभी इस वर्ष तैयारी करो। अगले वर्ष महाराष्ट्र और गुजरात से भी नम्बरवन जाना। निश्चय बुद्धि विजयी। कितने अच्छे-अच्छे अनुभवी रत्न हैं। सेवा को आगे बढ़ायेंगे जरुर बढ़ेगी। अच्छा–

24-4-84

वर्तमान ब्राह्मण जन्म – हीरे तुल्य

श्रेष्ठ स्वमान में स्थित करने वाले, राज्य भाग्य अधिकारी बच्चों प्रति बापदादा बोले:-

आज बापदादा अपने सर्व श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे हैं। विश्व की तमोगुणी अपवित्र आत्माओं के अन्तर में कितनी श्रेष्ठ आत्मायें हैं। दुनिया में सर्व आत्मायें पुकारने वाली हैं, भटकने वाली, अप्राप्त आत्मायें हैं। कितनी भी विनाशी सर्व प्राप्तियाँ हो फिर भी कोई न कोई अप्राप्ति जरुर होगी। आप ब्राह्मण बच्चों को सर्व प्राप्तियों के दाता के बच्चों को अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। सदा प्राप्ति स्वरुप हो। अल्पकाल के सुख के साधन अल्पकाल के वैभव, अल्पकाल का राज्य अधिकार नहीं होतु हुए भी बिन कौड़ी बादशाह हो। बेफिकर बादशाह हो। मायाजीत, प्रकृतिजीत स्वराज्य अधिकारी हो। सदा ईश्वरीय पालना में पलने वाले खुशी के झूले में, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले हो। विनाशी सम्पत्ति के बजाए अविनाशी सम्पत्तिवान हो। रतन जड़ित ताज नहीं लेकिन परमात्म बाप के सिर के ताज हो। रतन जड़ित श्रृंगार नहीं लेकिन ज्ञान रत्नों, गुणों रुपी रत्नों के श्रृंगार से सदा श्रृंगारे हुए हो। कितना भी बड़ा

विनाशी सर्व श्रेष्ठ हीरा हो। मूल्यवान हो लेकिन एक ज्ञान के रत्न, गुण के रत्न के आगे उनकी क्या वैल्यु हैं? इन रत्नों के आगे वह पत्थर के समान हैं। क्योंकि विनाशी हैं। नौ लखे हार के आगे भी आप स्वयं बाप के गले का हार बन गये हो। प्रभु के गले के हार के आगे नौ लाख कहो वा नौ पदम कहो वा अनगिनत पदम के मूल्य का हार कुछ भी नहीं है। ३६ प्रकार का भोजन भी इस ब्रह्मा भोजन के आगे कुछ नहीं है। कयोंकि डायरेक्ट बापदादा को भोग लगाकर इस भोजन को परमात्म प्रसाद बना देते हो। प्रसाद की वैल्यु आज अन्तिम जनम में भी भक्त आत्माओं के पास कितनी हैं? आप साधारण भोजन नहीं खाते। प्रभु प्रसाद खा रहे हो। जो एक-एक दाना पदमों से भी श्रेष्ठ है। ऐसी सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। ऐसा रुहानी श्रेष्ठ नशा रहता है। चलते-चलते अपनी श्रेष्ठता को भूल तो नहीं जाते हो? अपने को साधारण तो नहीं समझते हो? सिर्फ सुनने वाले या सुनाने वाले तो नहीं! स्वमान वाले बने हो? सुनने सुनाने वाले तो अनेका अनेक हैं। स्वमान वाले कोटों में कोई हैं। आप कौन हो? अनेकों में हो वा कोटों में कोई वालों में हो। प्राप्ति के समय पर अलबेला बनना उन्हों को बापदादा कौन सी समझ वाले बच्चे कहें? पाये हुए भाग्य को, मिले हुए भाग्य को अनुभव नहीं किया अर्थात् अभी महान भाग्यवान नहीं बने तो कब बनेंगे? इस श्रेष्ठ प्राप्ति के संगमयुग पर हर कदम यह सलोगन सदा याद रखो कि ''अब नहीं तो कब नहीं'' समझा। अच्छा!

अभी गुजरात जोन आया है। गुजरात की क्या विशेषता है? गुजरात की यह विशेषता है – छोटा बड़ा खुशी में जरुर नाचते हैं। अपना छोटा -पन, मोटा पन सभी भूल जाते हैं। रास के लगन में मगन हो जाते। सारी-सारी रात भी मगन रहते हें। तो जैसे रास की लगन में मगर रहते, ऐसे सदा ज्ञान की खुशी की रास में भी मगर रहते हो ना! इस अविनाशी लगन में मगन रहने के भी नम्बरवन अभयासी हो ना! विस्तार भी अच्छा है। इस बारी मुख्य स्थान (मधुबन) के समीप के साथी दोनों जोन आये हैं। एक तरफ है गुज-रात, दूसरे तरफ है राजस्थान। दोनों समीप हैं ना। सारे कार्य का सम्बन्ध राजस्थान और गुजरात से है। तो ड्रामा अनुसार दोनों स्थानों को सहयोगी बनने का गोल्डन चांस मिला हुआ है। दोनों हर कार्य में समीप और सहयोगी बने हुए हैं। संगमयुगी के स्वराज्य की राजगद्दी तो राजस्थान में हैं ना! कितने राजे तैयार किये हैं? राजस्थान के राजे गाये हुए हैं। तो राजे तैयार हो गये हैं या हो रहे हैं? राजस्थान में राजाओं की सवारियाँ निकलती हैं। तो राजस्थान वालों को ऐसा पूरी सवारी तैयार कर लानी चाहिए। तब तो सब पुष्पों की वर्षा करेंगे ना। बहुत ठाठ से सवारी निकीती है। तो कितने राजाओं की सवारी आयेगी। कम से कम जहाँ सेवाकेन्द्र है वहाँ का एक-एक राजा आवे तो कितने राजे हो जायेंगे। २५ स्थानों के २५ राजे आवें तो सवारी सुन्दर हो जायेगी ना। ड्रामा अनु-सार राजस्थान में ही सेवा की गद्दी बनी है। तो राजस्थान का भी विशेष पार्ट है। राजस्थान से ही विशेष सेवा के घोड़े भी निकले हैं ना। ड्रामा में पार्ट है सिर्फ इनको रिपीट करना है।

कर्नाटक का भी विस्तान बहुत हो गया है। अब कर्नाटक वालों को विस्तार से पार निकलना पड़े। जब मक्खन निकलते हैं तो पहले तो विस्तार होता है फिर उससे मक्खन सार निकलता है। तो कर्नाटक को भी विस्तार से अब मक्खन निकालना है। सार स्वरुप बनना और बनाना है। अच्छा–

अच्छा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहने वाले, सर्व प्राप्तयों के भण्डार सदा संगमयुगी श्रेष्ठ स्वराज्य और हमान भाग्य के अधिकारी आत्माओं को, सदा रुहानी नशे और खुशी स्वरुप आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से:- सभी अपने स्वराज्य अधिकारी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो? स्वराजय का अधिकार मिल गया? ऐसी अधिकारी आत्मायें शक्तिशाली होंगी ना। राज्य को सत्ता कहा जाता है। सत्ता अर्थात शक्ति। आजकल की गवर्मेन्ट को भी कहते हैं – राज्य सत्ता वाली पार्टी है। तो राज्य की सत्ता अर्थात् शक्ति है। तो स्वराज्य कितनी बड़ी शक्ति है? ऐसी शक्ति प्राप्त हुई है? सभी कमे-न्द्रियाँ आपकी शक्ति प्रमाण कार्य कर रही हैं? राजा सदा अपनी राज्य सभा को, राज्य दरबार को बुलाकर पूछते हैं कि कैसे राज्य चल रहा है? तो आप स्वराज्य अधिकारी राजाओं की कारोबार ठीक चल रही है? या कहाँ नीचे ऊपर होता है? कभी कोई राज्य कारोबारी धोखा तो नहीं देते हैं। कभी ऑख धोखा दे, कभी कान धोखा दें, कभी हाथ, कभी पांव धोखा दें। ऐसे धोखा तो नहीं खाते हों। अगर राज्य सत्ता ठीक है तो हर संकल्प हर सेकण्ड में पदमों की कमाई है। अगर राज्य सत्ता ठीक नहीं है तो हर सेकण्ड में पदमों की गँवाई होती है। प्राप्ति भी एक की पदमगुणा है तो और फिर अगर गँवाते हैं तो एक का पदमगुणा गँवाते हो। जितना मिलता है – उतना जाता भी है। हिसाब है। तो सारे दिन की राज्य कारोबार को देखो। ऑख रुपी मंत्री ने ठीक काम किया? कान रुपी मंत्री ने ठीक काम किया? सबकी डिपार्टमेन्ट ठीक रही या नहीं? यह चेक करते हो या थककर सो जाते हो? वैसे कर्म करने से पहले ही चेक कर फिर कर्म करना है। पहले सोचना फिर करना। पहले करना पीछे सोचना, यह नहीं। टोटल रिजन्ट निकालना अलग बात है लेकिन ज्ञानी आत्मा पहले सोचेगी फिर करेगी। तो सोच-समझ कर हर कर्म करते हो? पहले सोचने वाले हो या पीछे सोचने वाले हो। अगर ज्ञानी पीछे सोचे उसको ज्ञानी नहीं कहेंगे। इसलिए सदा स्वराज्य अधिकारी आत्मायें हैं और इसी स्वराज्य के अधिकार से विश्व के राज्य अधिकारी बनना ही है। बनेंगे या नहीं – यह क्वेश्चन नहीं। स्वराज्य है तो विश्व राज्य है ही। तो स्वराज्य में गड़बड़ तो नहीं है ना? द्वापर से तो गड़बड़ शालाओं में चक्र लगाते रहे। अब गड़बड़ शाला से निकल आये, अभी फिर कभी भी

किसी भी प्रकार की गड़बड़ शाला में पांव नहीं रखना। यह ऐसी गड़बड़ शाला है एक बार पांव रखा तो भूल भुलैया का खेल है। फिर निकलना मुश्किल हो जाता। इसलिए सदा एक रास्ता। एक में गड़बड़ नहीं होती। एक रास्ते पर चलने वाले सदा खुश सदा सन्तुष्ट।

बैंगलोर हाईकोट्र के जस्टिस से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात:-

किस स्थान पर और क्या अनुभव कर रहे हो? अनुभव सबसे बड़ी अथार्टी है। सबगसे पहला अनुभव है आत्म अभिमानी बनने का। अब आत्म अभिमानी का अनुभव हो जाता है तो परमात्म प्यार, परमात्म प्रापति का भी अनुभव स्वत: हो जाता है। जितना अनुभव उतना शक्तिशाली। जन्म-जन्मान्तर के दु:खों से छुड़ाने की जजमेन्ट देने वाले हो ना! या एक ही जन्म के दु:खों से छुड़ाने वाले जज हो? वह तो हुए हाईकोर्ट या सुप्रीमकोर्ट का जज। यह है स्प्रिचुअल जज। इस जज बनने में पढ़ाई की वा समय की आवश्य-कता नहीं है। दो अक्षर ही पढ़ने हैं – आत्मा और परमात्मा। बस। इसके अनुभवी बन गये तो स्प्रिचुअल जज बन गये। जैसे बाप जन्म-जन्म के दु:खों से छुड़ाने वाले हैं – इसलिए बाप को सुख का दाता कहते हैं, तो जैसा बाप वैसे बच्चे। डबल जज बनने से अनेक आत्माओं के कल्याण निमित्त बन जायेंगे। आयेंगे एक केस के लिए और जन्म-जन्म के केस जीतकर जायेंगे। बहुत खुश होंगे। तो बाप की आज्ञा है– स्प्रिचुअल जज बनो। अच्छा ओम् शान्ति।

26-4-84

रुहानी विचित्र मेले में सर्व खज़ानों की प्राप्ति

सदा श्रेष्ठ मतदाता शिवबाबा अपने सुपात्र, आज्ञाकारी बच्चों प्रति बोले:-

आज बापदादा बच्चों के मिलन की लगन को दख रहे हैं। सभी दूर-दूर से किस लिए आये हैं? मिलन मनाने के लिए अर्था मेले में आये हैं। यह रुहानी मेला विचत्र मेला है। इस मेले का मिलना भी विचित्र है और विचित्र आत्मायें विचित्र बाप से मिलती हैं। यह सागर और नदियों को मेला है। ईश्वरीय परिवार के मिलने का मेला है। यह मेला एक बार के मेले से अनेक बार की सर्व प्राप्ति करने के मेला है। इस मेले में खुले भण्डार, खुले खजाने हैं। जिसको जो खजाना चाहिए, जितना चाहिए उतना बिगर खर्चे के, अधिकार से ले सकते हैं। लाटरी भी है। जितनी भाग्य की श्रेष्ठ लाटरी लेने चाहे उतनी ले सकते हैं। अभी लाटरी लो और पीछे नम्बर नलिकलेगा, ऐसा नहीं है। अभी जो लेना हो, जितनी भी लकीर भाग्य की दृढ़ संकल्प द्वारा खीचने चाहो उतनी खींच सकते हो। सेकण्ड में लाटरी ले सकते हो। इस मेले में जन्म-जन्म के लिए राज्य पद का अधिकार ले सकते हो अर्थात् इस मेले में राज-योगी सो जन्म-जन्म के विश्व के राजे बन सकते हो। जितनी बड़ी प्राप्ति की सीट चाहिए वह सीट बुक कर सकते हो। इस मेले में विशेष सभी को एक गोल्डन चांस भी मिलता है। वह गोल्डन चांस है दिल से मेरा बाबा कहो और बाप के दिलतख्तनशीन बनो। इस मेले में एक विशेष गिफट भी मिलती है – वह गिफट है छोटा-सा सुखी और सम्पन्न संसार। जिस संसार में जो चाहो सब सदा ही प्राप्त है। वह छोटा-सा संसार बाप में ही संसार है। इस संसार में रहने वाला सदा ही प्राप्तियों के, खुशियों के अलौकिक झूलों में झूलता है। इस संसार में रहने वाले सदा इस देह की मिट्टी के मैले-पन के ऊपर फरिश्ता बन उड़ती कला में उड़ते रहते हैं। सदा रत्नों से खेलते पत्थर बुद्धि और पत्थरों से पार रहते हैं। सदा परमात्म साथ का अनुभव करते हैं। तुम्हीं से खाऊं, तुम्ही से सुनूँ, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से सर्व सम्बन्ध की प्रीत की रीति निभाऊं, तुम्हारी ही श्रीमत पर, आज्ञा पर हर कदम उठाऊं। यही उमंग उत्साह के, खुशी के गीत गाते रहते हैं। ऐसासंसार इस मिलन मेने में मिलता है। बाप मिला, संसार मिला। ऐसा यह श्रेष्ठ मेला है। तो ऐसे मेले में आये हो ना! ऐसा न हो कि मेला देखते-देखते एक ही प्राप्ति में इतने मस्त हो जाओ जो सर्व प्राप्तियाँ रह जायें। इस रुहानी मेले में सर्व प्रापति करके जाना है। बहुत मिला, इसमें ही खुश होकर चले जाओ, ऐसे नहीं करना। पूरा पा करके जाना। अभी भी चेक करो – कि मेले की सर्व प्राप्तियाँ प्राप्त कीं? जब खुला खजाना है तो सम्पन्न होकर ही जाना। फिर वहाँ जाकर ऐसे नहीं कहना कि यह भी करना था। जितना चाहिए था उतनानहीं किया। ऐसे तो नहीं कहेंगे ना? तो समझा इस मेले का महत्व। मेला मनाना अर्थात् महान बनना। सिर्फ आना और जाना नहीं है। लेकिन सम्पन्न प्राप्ति स्वरुप बनना है। ऐसा मेला मनाया है? निमित्त् सेवाधारी क्या समझते हैं? वृद्धि, विधि को भी चेन्ज करती हैं। वृद्धि होना भी जरुरी है और हर विधि में सम्पन्न और सन्तुष्ट रहना भी जरुरी है। अभी तो फिर भी बाप और बच्चे के सम्बन्ध से मिलते हो। समीप आते हो। फिर तो दर्शन मात्र रह जायेंगे। अच्छा–

सभी रुहानी मिलन मेला मनाने वाले, सर्व प्राप्तियों का सम्पूर्ण अधिकार पाने वाले, सदा सुखमय सम्पन्न संसार अपनाने वाले, सदा प्राप्तियों के, खुशियों के गीत गाने वाले, ऐसे सदा श्रेष्ठ मत पर चलने वाले, आज्ञाकारी सुपात्र बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

टीचर्स से:- सदा याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाली और सदा बाप की ब्लैसिंग लेने वाली। जहाँ बैलेन्स हैं वहाँ बाप द्वारा स्वत: ही आशीर्वाद तो क्या वरदान प्राप्त होते हैं। जहाँ बैलेन्स नहीं वहाँ वरदान भी नहीं। और जहाँ वरदान नहीं होगा वहाँ मेहनत करनी पड़ेगी। वरदान प्राप्त हो रहे हैं अर्थात् सर्व प्राप्तियाँ सहज हो रही हैं। ऐसे वरदानों को प्राप्त करने वाले सेवाधारी हो ना। सदा एक

बाप, एकरस स्थिति और एक मत होकर के चलने वाले। ऐसा ग्रुप है ना। जहाँ एकमत हैं वहाँ सदा ही सफल्ता है। तो सदा हर कदम में बाप वरदाता द्वारा वरदान प्राप्त करने वाले। ऐसे सच्चे सेवाधारी। सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते रहो। जितना हल्के उतना सेवा में हल्कापन। और जितना सेवा में हल्कापन आयेगा उतना सभी सहज उड़ेंगे उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना यही सफलता का आधार है। उस सेवा का प्रत्यक्ष फल मिलता ही है।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

संगमयुग सदा सर्व प्राप्ति करने का युग है। संगमयुग श्रेष्ठ बनने और बनाने का युग है। ऐसे युग में पार्ट बजाने वाली आत्मायें कितनी श्रेष्ठ हो गई। तो सदा यह स्मृति रहती है– कि हम संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें हैं? सर्व प्राप्तयों का अनुभव होता है? जो बाप से प्राप्ति होती है उस प्राप्ति के अधार पर सदा स्व्यं को सम्पन्न भरपूर आत्मा समझते हो? इतना भरपूर हो जो स्यवं भी खाते रहो और दूसरों को भी बांटो। जैसे बाप के लिए कहा जाता है भण्डारे भरपूर हैं, ऐसे आप बच्चों का भी सदा भण्डारा भरपूर है। कभी खाली नहीं हो सकता। जितना किसी को देंगे उतना और ही बढ़ता जयेगा। जो संगमयुग पुरुषोत्तम युग है, इस युग में पार्ट बजाने वाले भी पुरुषोत्तम हुए ना। दुनिया की सर्व आत्मायें आपके आगे साधारण हैं, आप अलौकिक और न्यारी आत्मायें हो! वह अज्ञानी हैं आप ज्ञानी हो। वह शूद्र हैं आप ब्राह्मण हो। वह दु:खधाम वाले हैं और आप संगमयुग वाले हो। संगमयुग भी सुखधाम है। कितने दु:खो से बच गये हो। अभी साक्षी होकर देखते हो कि दुनिया कितनी दु:खी है और उनकी भेंट में आप कितने सुखी हो। फर्क मालूम होता है ना! तो सदा हम पुरुषोत्तम युग की पुरुषोत्तम आत्मायें, सुख स्वरुप श्रेष्ठ आत्मायें हैं, इसी स्मृति में रहो। अगर सुख नहीं, श्रेष्ठता नहीं तो जीवन नहीं।

२. सदा याद की खुशी में रहते हो ना? खुशी ही सबसे बड़े ते बड़ी दुआ और दवा है। सदा यह खुशी की दवा और दुआ लेते रहो तो सदा खुश होने के कारण शरीर का हिसाब-किताब भी अपनी तरफ खींचेगा नहीं। न्यारे और प्यारे होकर शरीर का हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे। कितना भी कड़ा कर्मभेग हो, वह भी सूली से कांटा हो जाता है। कोई बड़ी बात नहीं लगती। समझ मिल गई यह हिसाब-किताब है तो खुशी-खुशी से हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले के लिए सब सहज हो जाता है। अज्ञानी हाय-हाय करेंगे और ज्ञानी सदा वाह मीठी बाबा, वाह ड्रामा की स्मृति में रहेंगे। सदा खुशी के गीत गाओ। बस यही याद करो कि जीवन में पाना था वह पा लिया। जो प्राप्ति चाहिए वह सब हो गई। सर्व प्राप्ति के भरपूर भण्डार हैं। जहाँ सदा भण्डार भरपूर हैं वहॉ दु:ख दर्द सब समाप्त हो जाते हैं। सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य, यही सदा मन में गीत गाते रहो। कितना बड़ा आपका भाग्य है। दुनिया वालों को तो भाग्य में सन्तान मिलेगा, धन मिलेगा, सम्पत्ति मिलेगी लेकिन यहाँ क्या मिलता? स्व्यं भाग्य विधाता ही भाग्य में मिल जाता है। भाग्य विधाता जब अपना हो गया तो बाकी क्या रह गया! यह अनुभव है ना! सिर्फ सुनी सुनाई पर तो नहीं चल पड़े। बड़ों ने कहा भाग्य मिलता है और आप चल पड़े इसको कहते हैं सुनी सुनाई पर चलना। तो सुनने से समझते हो वा अनुभव से समझते हो! सभी अनुभवी हो? संगमयुग है ही अनुभव करने का युग। इस युग में सर्व प्राप्ति का अनुभव कर सकते हो। अभी जो अनुभव कर रहे होयह सतयुग में नहीं होगा। यहाँ जो स्मृति है वह सतयुग में मर्ज हो जायेगी। यहाँ अनुभव करते हो कि बाप मिला है, वहँ बाप की तो बाप ही नहीं। संगमयुग ही अनुभव करने का युग है। तो इस युग में सभी अनुभवी हो गये। अनुभवी आत्मायें कभी भी माया से धोखा नहीं खा सकती। धोखा खाने से ही दु:ख होता है। अनुभव की अथार्टी वाले कभी धोखा नहीं खा सकते। सदा ही सफलता को प्राप्त करते रहेंगे। सदा खुश रहेंगे। तो वर्तमान सीजन का वरदान याद रखना – सर्व प्राप्ति स्वरुप सन्तुष्ट आत्मायें हैं। सन्तुष्ट बनाने वाले हैं। अच्छा–

29-4-84

ज्ञान सूर्य के रुहानी सितारों की भिन्न-भिन्न विशेषताएं

ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा, बापदादा यथाशक्ति और शक्तिशाली सितारों के प्रति बोले:-

आज ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा, अपने वैरायटी सितारों को देख रहे हैं। कोई स्नेही सितारे हैं, कोई विशेष सहयोगी सितारें हैं, कोई सह-जयोगी सितारे हैं, कोई श्रेष्ठ ज्ञानी सितारे हैं कोई विशेष सेवा के उमंग वाले सितारे हैं। कोई मेहनत का फल खाने वाले सितारे हैं, कोई सहज सफलता के सितारे हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न विशेषताओं वाले सभी सितारे हैं। ज्ञान सूर्य द्वारा सर्व सितारों को रुहानी रोशनी मिलने कारण चमकने वाले सितारे सर्व सितारों की रुहानी रोशनी मिलने कारण चमकने वाले सितारे तो बन गये। लेकिन हरेक प्रकार के सितारों की विशेषता की झलक भिन्न-भिन्न है। जैसे स्थूल सितारे भिन्न-भिन्न ग्रह के रुप में भिन्न-भिन्न फल अल्पकाल का प्राप्त कराते हैं। ऐसे ज्ञान सूर्य के रुहानी सितारों का भी सर्व आत्माओं को अविनाशी प्राप्ति का सम्बन्ध है। जैसा स्वयं जिस विशेषतासे सम्पन्न सितारा है वैसा औरों को भी उसी प्रमाण फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बनता है। जितना स्वयं ज्ञान चन्द्रमा वा सूर्य के समीप हैं उतना औरों को भी समीप सम्बन्ध में लाते हैं अर्थात् ज्ञान सूर्य द्वारा मिली हुई विशेषताओं के आधार पर औरों को डायरेक्ट विशेषताओं की शक्ति के आधार पर इतना समीप लाया है जो उनहों का डायरेक्ट ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा से सम्बन्ध हो

जाता है। इतने शक्तिशाली सितारे हो ना। अगर स्वयं शक्तिशाली नहीं, समीप नहीं तो डायरेक्ट कनेक्शन नहीं जुटा सकते। दूर होने के कारण उन्हीं सितारों की विशेषता अनुसार उन्हों के द्वारा जितनी शक्ति, सम्बन्ध सम्पर्क प्राप्त कर सकते हैं उतनी यथा शक्ति प्राप्ति करते रहते हैं। डायरेक्ट शक्ति लेने की शक्ति नहीं होती है। इसलिए जैसे ज्ञान सूर्य ऊंचे ते ऊंचे हैं, विशेष सितारे ऊंचे हैं। वैसे ऊंची स्थिति का अनुभव नहीं कर सते। यथा शक्ति, यथा प्राप्ति करते हैं। जैसी शक्तिशाली स्थिति होनी चाहिए वैसे अनुभव नहीं करते।

ऐसी आत्माओं के सदा यही बोल मन से वा मुख से निकलते कि होना यह चाहिए लेकिन है नहीं। बनना यह चाहिए लेकिन बने नहीं हैं। करना यह चाहिए लेकिन कर नहीं सकते। इसको कहा जाता है यथाशक्ति आत्मायें। सर्व शक्तिवान आत्मायें नहीं हैं। ऐसी आत्मायें वा स्व के वा दूसरों के विघ्न विनाशक नहीं बन सकते। थोड़ा-सा आगे बढ़े और विघ्न आया। एक विघ्न मिटाया, हिम्मत में आये, खुशी में आये फिर दूसरा विघ्न आयेगा। जीवन की अर्थात् पुरुषार्थी की लाइन सदा क्लीयर नहीं होगी। रुकना, बढ़ना इस विधि से आगे बढ़ते रहेंगे। और औरों को भी बढ़ाते रहेंगे। इसलिए रुकने और बढ़ने के कारण तीव्रगति का अनुभव नहीं होता। कब चलती कला, कब चढ़ती कला, कब उड़ती कला। एकरस शक्तिशाली अनुभूति नहीं होती। कभी समस्या, कभी समाधान स्वरुप। क्योंकि यथाशक्ति है। ज्ञान सूर्य से सर्व शक्तियों को ग्रहण करने की शक्ति नहीं। बीच का कोई सहारा जरुर चाहिए। इसको कहा जाता है यथा शकति आत्मा।

जैसे यहँ ऊंची पहाड़ी पर चढ़ते हो। जिसभी वाहन पर आते हो, चाहे बस में, चाहे कार में, तो इन्जन पावरफुल हाती है तो तीव्रगति से और बिना कोई हवा पानी के सहारे सीधा ही पहुँच जाते हो। और इन्जन कमजोर है तो रुककर पानी वा हवा का सहारा लेना पड़ता है। नानस्टाप नहीं। स्टाप करना पड़ता है। ऐसी यथशाक्ति आत्मायें, कोई न कोई आत्माओं का सैलवेशन का, साधनों का आधार लेने के बिना एक तीव्रगति उड़ती कला की मंजिल पर पहुँच नहीं पाते हैं। कभी कहेंगे, आज खुशी कम हो गई, आज योग इतना शक्तिशाली नहीं है। आज इस धारणा करने में समझते हुए भी कमजोरी हूँ। आज सेवा का उमंग नहीं आ रहा है। कभी पानी चाहिए कभी हवा चाहिए, कभी धक्का चाहिए। इसको शक्तिशाली कहेंगे? हूँ तो अधिकारी, लेने में नम्बरवन अधिकारी हूँ। किसी से कम नहीं। और करने में क्या कहते? हम तो छोटे हैं। अभी नये हैं। पुराने नहीं है। सम्पूर्ण थोड़े ही बने हैं। अभी समय पड़ा है। बड़ों का दोष्ज्ञ है। हमारा नहीं है। सीख रहे हैं, सीख जायेंगे। बापदादा तो सदा ही कहते हैं। सभी को चांस देना चाहिए। हमको भी यह चांस मिलना चाहिए। हमारा सुनना चाहिए। लेने में हम और करने में जैसे बड़े करेंगे। अधिकार लेने में अब और करने में कब कर लेंगे। लेने में बड़े बन जाते। और करने में छोटे बन जाते। इसको कहा जाता है यथा शक्ति आत्मा।

बापदादा यह रमणीक खेल देख-देख मुस्कराते रहते हैं। बाप तो चतुर सुजान है। लेकिन मास्टर चतुर सुजान भी कम नहीं। इसलिए यथा शक्ति आत्मा से अब मास्टर सर्व शक्तिवान बनो। करने वाले बनो। स्वत: ही शक्तिशाली कर्म का फल शुभ भावना, श्ररेठ कामना का फल स्वत: ही प्रापत होगा। सर्व प्राप्ति स्वयं ही आपके पीछे परछाई के समान अवश्य आयेगी। सिर्फ ज्ञान सूर्य की प्राप्त हुई शक्तियों की रोशनी में चलो तो सर्व प्राप्ति रुपी परछाई आप ही पीछे-पीछे आयेगी। समझा–

आज यथा शक्ति और शक्तिशाली सितारों की रिमझिम देख रहे थे। अच्छा-

सभी तीव्रगति से भाग-भाग कर पहुँच गये हैं। बाप के घर में पहुँचे तो बच्चों को कहेंगे भले पधारे। जैसा जितना भी स्थान है, आपका ही घर है। घर तो एक दिल में बढ़ेगा नहीं लेकिन संख्या तो बढ़ गई है ना। तो समाना पड़ेगा। स्थान और समय को संख्या प्रमाण ही चलाना पड़ेगा। सभी समा गये हो ना! क्यों तो सभी बात में लगेगी ही। फिर भी अभी भी बहुत-बहुत लकी हो। क्योंकि पाण्डव भवन वा जो स्थान है उसके अन्दर ही समा गये। बार तक तो क्यू नहीं गई है ना! वृद्धि होनी है, क्यू भी लगनी है। सदा हर बात में खुशी मौज में रहो। फिर भी बाप के घर में जैसा दिल का आराम कहपँ मिल सकेगा। इसलिए सदा हर हाल में सन्तुष्ट रहना, संगमयुग की वरदानी भूमि की तीन पैर पृथ्वी सतयुग के महलों से भी श्रेष्ठ है। इतनी बैठने की जगर मिली है यह भी बहुत श्रेष्ठ है। यह दिन भी फिर भी याद आयेगा। अभी फिर भी दृष्टि और टोली तो मिलती है। फिर दृष्टि और टोली दिलाने वाले बनना पड़ेगा। वृद्धि हो रही है यह भी खुशी की बात है ना। जो मिलता, जैसे मिलता सबमें राजी और वृद्धि अर्थात् कल्याण है। अच्छा–

कर्नाटक विशेष सिकीलधा हो गया है। महाराष्ट भी सदा संख्या में महान रहा है। देहली ने भी रेस की है। भल वृद्धि को पाते रहो। यू.पी. भी किसी से कम नहीं है। हर स्थान की अपनी-अपनी विशेषता है। वह फिर सुनायेंगे।

बापदादा को भी साकार शरीर का आधार लेने के कारण समय की सीमा रखनी पड़ती है। फिर भी लोन लिया हुआ शरीर है। अपना तो नहीं है। शरीर का जिम्मेवार भी बापदादा हो जाता है। इसलिए बेहद का मालिक भी हद में बंध जाता है। अव्यक्त वतन में बेहद है। यहाँ तो संयम, समय और शरीर की शक्ति सब देखना पड़ता है। बेहद में ओ, मिलन मनाओ। वहॉ कोई नहीं कहेगा कि अभी आओ अभी जाओ वा नम्बरवार आओ। खुला निमन्त्रण है अथवा खुला अधिकार है। चाहे दो बजे आओ, चाहे चार बजे आओ। अच्छा—

सदा सर्व शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा ज्ञज्ञन सूर्य के समीप और समान ऊंची स्थिति में स्थित रहने वाली विशेष आत्मओं को सदा हर कर्म करने में ''पहले मैं'' का उमंग उत्साह रखने वाले हिम्मतवान आत्माओं को, सदा सर्व को शक्तिशाली आत्मा बानाने वाले सर्व समीप बच्चों को ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- बापदादा को आप बच्चों पर नाज़ है, किस बात का नाज हैं? सदैव बाप अपने समान बच्चों को देख नाज़ करते हैं। जब बच्चे बाप से भी विशेष्ज्ञ कार्य करके दिखाते तो बाप का कितना नाज़ होगा। दिन-रात बाप की याद और सेवा यह दोनों ही लगन लगी हुई है। लेकिनि महावीर बच्चों की विशेषता यह है कि पहले याद को रखते फिर सेवा को रखते। घोड़ेसवार और प्यादे पहले सेवा पीछे याद। इसलिए फर्क पड़ जाता है। पहले याद फिर सेवा करें तो सफलता है। पहले सेवा को रखने से सेवा में जो भी अच्छा-बुरा होता है उसके रुप में आ जाते हैं और पहले याद रखने से सहज ही न्यार हो सकते हैं। तो बाप को भी नाज है ऐसे समान बच्चों पर! सारे विश्व में ऐसे समान बच्चे किसके होंगे? एक-एक बच्चे की विशेषता वर्णन करें तो भागवत बन जाए। शुरु से एक महारथी की विशेषता वर्णन करें तो भागवत बन जायेगा। मधुबन में जब ज्ञान सूर्य और सितारे संगठित रुप में चमकते हैं तो मधुबन के आकश की शाभा कितनी श्रेष्ठ हो जाती है। ज्ञान सूर्य के साथ सितारे भी जरुर चाहिए।

1-5-84

विस्तार में सार की सुन्दरता

सर्व को सार स्वरुप में स्थित करने वाले बापदादा शक्तिशाली आत्माओं प्रति बोले:-

बापदादा विस्तार को भी देख रहे हैं और विस्तार में सार स्वरुप बच्चों को भी देख रहे हैं। विस्तार इस ईश्वरीय वृक्ष का श्रृंगार है। औरसार स्वरुप बच्चे इस वृक्ष के फल स्वरुप हैं। विस्तार सदा वैराइटी रुप होता है? और वैराइटी स्वरुप की रौनक सदा अच्छी लगती है। वैराइटी की रौनक वृक्ष का श्रृंगार जरुर है, लेकिन सार स्वरुप फल शक्तिशाली होता है। विस्तार को देख सदा खुश होते हैं औरफल को देख शक्तिशाली बनने की शुभ आशा रखते हैं। बापदादा भी विस्तार के बीच सार को देख रहे थे। विस्तार में सार कितना सुन्दर लगता है। यह तो सभी अनुभव हो। सार की परसेन्टेज और विस्तार की परसेन्टेज दोनों में कितना अन्तर हो जाता है। यह भी जानते हो ना। विस्तार की विशेषता अपनी है और विस्तार भी आवश्यक है, लेकिन मूल्य सार स्वरुप फल का होता है। इसलिए बापदादा दोनों को देश हर्षित होते हैं। विस्तार रुपी पत्तों से भी प्यार है। फूलों से भी प्यार तो फलों से भी प्यार। इसलिए बापदादा को बच्चों के समान सेवाधारी बन मिलने आना ही पड़ता है। जब तक समान नहीं बनें तो साकार मिलन मना नहीं सकते। चाहे विस्तार वाली आत्मायें हैं, चाहे सार स्वरुप आत्मायें हैं। दोनों ही बाप के बने अर्थात् बच्चे बने, इसलिए बाप को सर्व नम्बरवार बच्चों के मिलन भावना का फल देना ही पड़ता है। जब भक्तों को भी भक्ति का फल अल्पकाल का प्राप्त होता ही है तो बच्चों का अधिकार बच्चों को अवश्य प्राप्त होता है।

आज मुरली चलाने नहीं आये हैं। जो दूर-दूर से सभी आये हैं तो मिलन मनाने का वायदा निभाने आये हैं। कोई सिर्फ प्रेम से मिलते, कोई ज्ञान से मिलते, कोई समान स्वरुप से मिलते। लेकिन बाप को सतो सबसे मिलना ही है। आज सब तरफ से आये हुए बच्चों की विशेषता देख रहे थे। एक देहली की विशेषता देख रहे थे। सेवा की आदि का स्थान है और आदि में भी सेवाधारियों को सेवा की आदि के लिए जमनु का किनारा ही प्राप्त हुआ। जमुना किनारे जाकर सेवा की ना! सेवा का बीज भी देहली में जमुना किनारे पर शुरु हुआ और राजय का महल भी जमुना किनारे पर ही होगा। इसलिए गोपी बल्लभ, गोप गोपियों के साथ-साथ जमुना किनारा भी गाया हुआ है। बापदादा वह स्थापना की शक्तिशाली बच्चों की टी.वी देख रहे थे। तो देहली वालों की विशेषता वर्तमान समय में भी है और भविष्य में भी है। सेवा का फाउन्डेशन स्थान के निवासी इतने शक्तिशाली हो ना! देहली वालों के ऊपर सदा शक्तिशाली रहने की जिम्मेवारी है। देहली निवासी निमित्त आत्माओं को सदा इस जिम्मेवारी का ताज पड़ा हुआ है ना। कभी ताज उतार तो नहीं देते हैं। देहली निवासी अर्थात् सदा जिम्मेवारी के ताजधारी। समझा देहली वालों की विशेषता। सदा इस विशेषता को कर्म में लाना है। अच्छा–

दूसरे हैं सिकीलधे कर्नाटक वाले। वह भावना और स्नेह के नाटक बहुत अच्छे दिखाते हैं। एक तरफ अति भावना और अति अति स्नेही आत्मायें हैं दूसरी तरफ दुनिया के हिसाब से एज्युकेटेड नामीग्रामी भी कर्नाटक में हैं तो भावना और पद अधिकारी दोनों ही है। इसलिए कर्नाटक से आवाज बुलन्द हो सकता है। धरनी आवाज बुलन्द की है। क्योंकि वी.आई.पीज होते हुए भी भावना और श्रद्धा की धरनी होने के कारण निर्माण है। वह सहज साधन बन सकते हैं। कर्नाटक की धरनी इस विशेष कार्य के लिए निमित्त है। सिर्फ अपनी इस विशेषता को भावना और निर्माण दोनों को सेवा में सदा साथ रखें। इस विशेषता को किसी भी वातावरण में छोड़ नहीं दें। कर्नाटक की नाव के दो चप्पू हैं। इन दोनों को साथ-साथ रखना। आगे पीछे नहीं। तो सेवा की नाव धरनी की विशेषता की सफलता दिखायेंगी। दोनों का बैलेन्स नाम बाला करेगा। अच्छा–

सदा स्व्यं को सार स्वरुप अर्थात् फल स्वरुप बनाने वाले, सदा सार स्वरुप में स्थित हो औरों को भी सार की स्थिति में स्थित करने

वाले, सदा शक्तिशाली आत्मा शक्तिशाली याद स्वरुप, शक्तिशाली सेवाधारी, ऐसे समान स्वरुप मिलन मनाने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अव्यक्त बापदादा की पार्टियों से मुलाकात

१. सदा अपने को बाप के वर्से के अधिकारी अनुभव करते हो? अधिकारी अर्थात् शक्तिशाली आत्मा हैं। ऐसे समझते हुए कर्म करो। कोई भी प्रकार की कमजोरी रह तो नहीं गई है। सदा स्वयं को जैसे बाप वेसे हम, बाप सर्व शक्तिवान है तरे बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान हैं, इस स्मृति से सदा ही सहज आगे बढ़ते रहेंगे। यह खुशी सदा रहे क्योंकि अब की खुशी सारे कल्प में नहीं हो सकती। अब बाप द्वारा प्राप्ति है, फिर आत्माओं द्वारा आत्माओं को प्राप्ति है। जो बाप द्वारा प्राप्ति होती है वह आत्माओं से नहीं हो सकती। आत्मा स्वयं सर्वज्ञ नहीं है। इसलिए उससे जो प्राप्ति होती है वह अल्पकाल की होती है और बाप द्वारा सदाकाल की अविनाशी प्राप्ति होती है। अभी बाप द्वारा अविनाशी खुशी मिलती है। सदा खुशी में नाचते रहते हो ना! सदा खुशी के झूले में झलते रहो। नीचे आया और मैला हुआ। क्योंकि नीचे मिट्टी है। सदा झूले में तो सदा स्वच्छ हैं उससे मिलने की विधि स्वच्छ बनना पड़े। तो सदा झूले में रहने वाले सदा स्व्च्छ। जब झूला मिलता है तो नीचे आते क्यों! झूले में ही खाओ, पियो, चलो... इतना बड़ा झूला है। नीचे आने के दिन समाप्त हुए। अभी झूलने के दिन हैं। तो सदा बाप के साथ सुख के झूले में, खुशी, प्रेम ज्ञान, आनन्द के झूले में झूलने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं, यह सदा याद रखो। जब भी कोई बात आये तो यह वरदान याद करना तो फिर से वरदान के आधार पर साथ का, झूलने का अनुभव करेंगे। यह वरदान सदा सेफ्टी का साधन है। वरदान याद रहना अर्थात् वरदाता याद रहना। वरदान में कोई मेहनत नहीं होती। सर्व प्राप्तियाँ सहज हो जाती हैं।

२. सभी अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा अनुभव करते हो? सबसे बड़ा भाग्य, भाग्यविधाता अपना बन गया। सदा इस श्रेष्ठ भाग्य की खुशी और नशा रहे। यह रुहानी नशा है जो सदा रह सकता है। विनाशी सदा नशा रहे तो नुकसान हो जाए। जो इस रुहानी नशे में होगा उसको स्वत: ही इस पुरानी दुनिया की आकर्षण भूली हुई होगी। ना पुरानी देह, न पुराने देह के सम्बन्ध, सभी सहज भी भूल जाते हैं। भूलने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। देह भान भी भूला हुआ होगा। आत्म अभिमानी होंगे। सदा देही-अभिमानी स्थिति ही सम्पूर्ण स्थिति है। तो सदा इसी स्मृति में हरे कि हम भाग्यवान आत्मायें हैं कोई साधारण भाग्यवान, कोई श्रेष्ठ भाग्यवान हैं। श्रेष्ठ शब्द सदा याद रखना, श्रेष्ठ आत्मा हूँ, श्रेष्ठ बाप का हूँ और श्रेष्ठ भाग्यवान हूँ। यही वरदान सदा साथ रहे। जब श्रेष्ठ आत्मा, श्रेष्ठ समय श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ कृत्ति हो जायेगी तो आप सबको देखकर अनेक आत्माओं को श्रेष्ठ बनने की शुभ आशा उत्पन्न होगी। इससे सेवा भी हो जायेगी।

विदाई के समय:- गुड मार्निंग तो सब करते हैं लेकिन आपकी गाड के साथ मार्निंग है तो गाडली मार्निंग हो गई ना। गाड के साथ रात बिताई और गाड के साथ मार्निंग मना रहे हो। तो सदा गाड और गुड दोनों ही याद रहें। गाड की याद ही गुड बनाती है। अगर गाड की याद नहीं तो गुड नहीं बन सकते। आप सबकी सदा ही गाडली लाइफ है, इसलिए हर सेकण्ड, हर संकल्प गुड ही गुड है। तो सिर्फ गुड मार्निंग, गुड नइवनिंग, गुड नाइट नहीं लेकिन हर सेकण्ड, हर संकल्प गाड की याद के कारण गुड है। ऐसे अनुभव करते हो। अभी जीवन ही गुड है क्योंकि जीवन ही गाड के साथ है। हर कर्म बाप के साथ करते हो ना। अकेले तो नहीं करते? खाते हो तो बाप के साथ, या अकेले खा लेते हो। सदा गाड और गुड दोनों का सम्बन्ध याद रखो और जीवन में लाओ। समझा – अच्छा सभी को बापदादा का विशेष अमृतवेले का अमर यादप्यार और नमस्ते।

प्रश्न:- फरिश्ता बनने के लिए किस बन्धन से मुक्त होना पड़ेगा?

उत्तर:- मन के बन्धनों से मुक्त बनो। मन के व्यर्थ संकल्प भी फरिश्ता नहीं बनने देंगे। इसलिए फरिश्ता अर्थात् जिसका मन के व्यर्थ संकल्पों से भी रिश्ता नहीं। सदा यह याद रहे कि हम फरिश्ते किसी रिश्ते में बंधने वाले नहीं। अच्छा–

3-5-84

परमात्मा की सबसे पहली श्रेष्ठ रचना – ब्राह्मण

दिलाराम बापदादा अपने ब्राह्मण बच्चों प्रति बोले:-

आज रचता बाप अपनी रचना को, उसमें भी पहली रचना ब्राह्मण आत्माओं को देख रहे हैं। सबसे पहली श्रेष्ठ रचना आप ब्राह्मण श्रेष्ठ आत्मायें हो, इसलिए सर्व रचना से प्रिय हो। ब्रह्मा द्वारा ऊंचे ते ऊंची रचना मुख वंशावली महान आत्मायें, ब्राह्मण आत्मायें हो। देवताओं से भी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें गाई हुई हैं। ब्राह्मण ही फरिश्ता सो देवता बनते हैं। लेकिन ब्राह्मण जीवन आदि पिता द्वारा संगमयुगी आदि जीवन है। आदि संगमवासी ज्ञान स्वरुप त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री ब्राह्मण आत्मायें हैं। साकार स्वरुप में साकारी सृष्टि पर आत्मा और परमात्मा के मिलन और सर्व सम्बन्ध के प्रीति की रीति का अनुभव परमात्म-अविनाशी खजानों को अधिकार साकार स्वरुप से ब्राह्मणों का ही यह गीत है, हमने देखा हमने पाया शिव बाप को ब्रह्मा बाप द्वारा। यह देवताई जीवन का गीत नहीं है। साकार सृष्टि पर इस साकारी नेत्रों द्वारा दोनों बाप को देखना उनके साथ खाना पीना, चलना, बोलना सुनना, हर चरित्र का अनुभव

करना, विचित्र को चित्र से देखना यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का है।

ब्राह्मण ही कहते हैं – हमने भगवान को बाप के रुप में देखा। माता, सखा, बन्धु, साजन के स्वरुप में देखा। जो ऋर्षि, मुनि, तपस्वी, विद्वान आचार्य, शास्त्री सिर्फ महिमा गाते ही रह गये। दर्शन के अभिलाषी रह गये। कब आयेगा, कब मिल ही जायेगा। इसी इन्त-जार में जन्म-जन्म के चक्र में चलते रहे लेकिन ब्राह्मण आत्मायें फलक से, निश्चय से कहती, नशे से कहती, खुशी-खुशी से कहती, दिल से कहती हमारा बाप अब मिल गया। वह तरसने वाले और आप मिलन मनाने वाले। ब्राह्मण जीवन अर्थात् सर्व अवि-नाशी अखुट, अटल, अचल सर्व प्राप्ति स्वरुप जीवन, ब्राह्मण जीवन इस कल्प वृक्ष वृद्धि को प्राप्त करता है। ब्राह्मण जीवन की जड़ों से सर्व वैराइटी आत्माओं को बीज द्वारा मुक्ति जीवन मुक्ति की प्राप्ति का पानी मिलता है। ब्राह्मण जीवन के आधार से यह टाल टालियाँ विस्तार को पाती है। तो ब्राह्मण आत्मायें सारे वैराइटी वंशावली की पूर्वज हैं। ब्राह्मण आत्मायें विश्व के सर्व श्रेष्ठ कार्य का, निर्माण का मुहूर्त करने वाली हैं। ब्राह्मण आत्मायें ही अवश्मेघ राजस्व यज्ञ, ज्ञान यज्ञ रचने वाली श्रेष्ठ आत्मयें हैं। ब्राह्मण आत्मायें हर आत्मा के ८४ जन्म की जन्म पत्री जानने वाली हैं। हर आत्मा के श्रेष्ठ भाग्य की रेखा विधाता द्वारा श्रेष्ठ बनाने वाली हैं। ब्राह्मण आत्मायें महान यात्रा मुक्ति, जीवन मुक्ति की कराने के निमित्त हैं। ब्राह्मण आत्मायें सर्व आत्माओं को सामूहिक सगाई बाप से कराने वाली हैं। परमात्म हाथ में हाथ का हथियाला बांधवाने वाली हैं। ब्राह्मण आत्मायें जन्म-जन्म के लिए सदा पवित्रता का बन्धन बाँधने वाली हैं। अमरकथा कर अमर बनाने वाली हैं। समझा – कितने महान हो और कितने जिम्मेवार आत्मायें हो। पूर्वज हो। जैसे पूर्वज वैसी वंशावली बनती है। साधारण नहीं हो। परिवार के जिम्मेवार वा कोई सेवास्थान के जिम्मेवार – इस हम के की जिम्मेवार नहीं हो। विश्व की आत्माओं के आधार मूर्त हो। उद्धार मूर्त हो। बेहद की जिम्मेवारी हर ब्राह्मण आत्मा के ऊपर है। अगर बेहद की जिम्मेवारी नहीं निभाते, अपनी लौकिक प्रवृत्ति वा अलौकिक प्रवृत्ति में ही कभी उड़ती कला, कब चढ़ती कला, कब चलती कला, कब रुकती कला, इसी कलाबाजी में ही समय लगाते, वह ब्राह्मण नहीं लेकिन क्षत्रिय आत्मायें हैं। पुरुषार्थ की कमाल पर यह करेंगे, ऐसे करेंगे-करेंगे के तीर निशान-अन्दाजी करते रहते हैं। निशान-अन्दाजी और निशान लग जाए इसमें अन्तर है। वह निशान का अन्दाज करते रह जाते। अब करेंगे, ऐसे करेंगे। यह निशान का अन्दाज करते। उसको कहते हैं क्षत्रिय आत्मायें। ब्राह्मण आत्मायें निशान का अन्दाजा नहीं लगातीं। सदा निशान पर ही स्थित होती हैं। सम्पूर्ण निशाना सदा बुद्धि में है ही है। सेकण्ड के संकल्प से विजयी बन जाते। बापदादा – ब्राह्मण बच्चे और क्षत्रिय बच्चे दोनों का खेल देखते रहते हैं। ब्राह्मणों का विजय का खेल और क्षत्रियों को सदा तीर कमान के बोझ उठाने का खेल। हर समय पुरुषार्थ की मेहनत का कमान है ही है। एक समस्या को समाधान करते ही हैं तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाती। ब्राह्मण समाधान स्वरुप हैं। क्षत्रिय बार-बार समस्या को समाधान करने में लगे हुए रहते। जैसे साकार रुप में हँसी की कहानी सुनाते थे ना। क्षत्रिय क्या करत भये। इसकी कहानी है ना चूहा निकालते तो बिल्ली आ जाती। आज धन की समस्या कल मन की, परसों तन की वा सम्बन्ध सम्पर्क वालों की। मेहनत में ही लगे रहते हैं। सदा कोई न कोई कम्पलेन्ट जरुर होगी। चाहे अपनी हो, चाहे दूसरों की हो। बापदादा ऐसे समय प्रति समय कोई न कोई मेहनत में लगे रहने वाले बच्चों को देख दयालु कृपालु के रुप से देख रहम भी करते हैं।

संगमयुग, ब्राह्मण जीवन दिलाराम की दिल पर आराम करने का समय है। दिल पर आराम से रहो। ब्रह्मा भोजन खाओ। ज्ञान अमृत पियो। शक्तिशाली सेवा करो और आराम मौज से दिलमस्त पर रहो। हैरान क्यों होते हो। हे राम नहीं कहते। हे बाबा या हे दादी दीदी तो कहते हो ना। हे बाबा, हे दादी दीदी कुछ सुना। कुछ करो। यह हैरान होना है। आराम से रहने का युग है। रुहानी मौज करो। रुहानी मौजों में यह सुहावने दिल बिताओ। विनाशी मौज नहीं करना। गाओ, नाचों, मुरझाओं नहीं। परमात्म मौजों का समय अब नहीं मनाया तो कब मनायेंगे! रुहानी शान में बैठो। परेशान क्यों होते हो? बाप को आश्चर्य लगता है छोटी-सी चींटी बुद्धि तक चली जाती है। बुद्धियोग विचलित कर देती है। जैसे स्थूल शरीर में भी चींटी काटेगी तो शरीर हिलेगा, विचलित होगा ना। वैसे बुद्धि को विचलित कर देती है। चींटी अगर हाथी के कान पर जाती है तो मूर्छित कर देती है ना! ऐसे ब्राह्मण आत्मा मूर्छित हो क्षत्रिय बन जाती है। समझा क्या खेल करते हो। क्षत्रिय नहीं बनना। फिर राजधानी भी त्रेतायुगी मिलेगी। सतयुगी देवताओं ने खा-पीकर जो बचाया होगा वह क्षत्रियों को त्रेता में मिलेगा। कर्म के खेत का पहला पूर ब्राह्मण सो देवताओं को मिलता है। और दूसरा पूर, क्षत्रियों को मिलता है। खेत के पहले पूर की टेस्ट और दूसरे पूर में टेस्ट क्या हो जाती है, यह तो जानते हो ना! अच्छा–

महाराष्ट्र और यू.पी. जोन है। महाराष्ट्र की विशेषता है। जैसे महाराष्ट्र नाम है वैसे महान आत्माओं को सुन्दर गुलदस्ता बापदादा को भेंट करेंगे। महाराष्ट्र की राजधानी सुन्दर और सम्पन्न् है। तो महाराष्ट्र को ऐसे सम्पन्न नामीग्रामी आत्माओं को सम्पर्क में लाना है। इसलिए कहा कि महान आत्मा बनाए सुन्उर गुलदस्ता बाप के सामने लाना है। अब अन्त के समय में इन सम्पत्ति वालों का भी पार्ट है। सम्बन्ध में नहीं, लेकिन सम्पर्क का पार्ट है। समझा!

यू.पी. में देश-विदेश में प्रसिद्ध वन्डर आफ दि वर्ल्ड ताजमहल है ना! जैसे यू.पी. में वर्ल्ड की वन्डरफुल चीज है ऐसे यू.पी. वालों को सेवा में वन्डरफुल प्रत्यक्ष फल दिखाना है। जो देश विदेश में, ब्राह्मण संसार में नामीग्रामी हो कि यह तो बहुत वन्डरफुल काम

किया, वन्डरफुल आफ वर्ल्ड हो। ऐसा वन्डरफुल कार्य करना है। गीता पाठशालायें हैं, सेन्टर हैं, यह वन्डरफुल नहीं। जो अब तक किसी ने नहीं किया वह करके दिखायें तब कहेंगे वन्डरफुल। समझा। विदेशी भी अब हाजिर नाजिर हो गये हैं, हर सीजन में। विदेश वाले विदेश के साधनों द्वारा विश्व में दोनों बाप को हाजिर-नाजिर करेंगे। नाज़िर अर्थात् इस नजर से देख सकें। तो ऐसे बाप को विश्व के आगे हाजिर-नाजिर करेंगे। समझा विदेशियों को क्या करना है। अच्छा– कल तो सारी बारात जाने वाली है। आखिर वह भी दिन आयेगा – जो हेलीकाप्टर भी उतरेंगे। सए साधन तो आपके लिए ही बन रहे हैं। जेसे सतयुग में विमानों की लाइन लगी हुई होती है। अभी यहाँ जीप और बसों की लाइन लगी रहती। आखिर विमानों की भी लाइन लगेगी। सभी डरकर भागेंगे और सब कुछ आपको देकर जायेंगे। वह डरेंगे और आप उड़ेगे। आपको मरने का डर तो है नहहं। पहले ही मर गये। पाकिस्तान में सैम्पल देखा था ना – सब चाबियाँ देकर चले गये। तो सब चाबियाँ आपको मिलनी हैं। सिर्फ सम्भालना। अच्छा–

सदा ब्राह्मण जीवन की सर्व विशेषताओं को जीवन में लाने वाले, सदा दिलाराम बाप के दिलतख्त पर रुहानी मौज, रुहानी आराम करने वाले, स्थूल आराम नहीं कर लेना, सदा संगमयुग के श्रेष्ठ शान में रहने वाले, मेहनत से मुहब्बत की जीवन में लवलीन रहने वाले, श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को बापदादाका यादप्यार और नमस्ते।

7-5-84

बैलेन्स रखने से ही ब्लैसिंग की प्राप्ति

प्यार के सागर, आनन्द के सागर शिवबाबा, पद्मापद्म भाग्यवान बच्चों प्रति बोले:-

आज प्रेम स्वरुप, याद स्वरुप बच्चों को प्रेम और याद का रिटर्न देने के लिए प्रेम के सागर बाप इस प्यार की महफिर बीच आये हैं। यह रुहानी प्यार की महफिर रुहानी सम्बन्ध की मिलन महफिर है। जो सारे कल्प में अब ही अनुभव करते हो। सिवाए इस एक जन्म के और कब भी रुहानी बाप का रुहानी प्यार मिल न सके। यह रुहानी प्यार रुहों को सच्ची राहत देता है। सच्ची राह बताता है। सच्ची सर्व प्राप्ति कराता है। ऐसा कभी संकल्प में भी आया था कि इस साकार सृष्टि में इस जन्म में और ऐसी सहज विधि से ऐसे आत्मा और परमात्मा का रुहानी मिलन सन्मुख होगा? जैसो बाप के लिए सुना था कि ऊंचे ते ऊंचा बहुत तेजजोमय, बड़े ते बड़ा है, वैसे ही मिलने की विधि भी मुश्किल और बड़े अभयास से होगी यह सोचते-सोचते नाउम्मीद बना दिया। दिलशिकस्त बच्चों को शक्तिशाली बना दिया। कब मिलेगा, वह अब मिलन का अनुभव करा दिया। सारे प्रापर्टी का अधिकारी बना दिया। अभी अधिकारी आत्मायें अपने अधिकार को जानते हो ना! अच्छी तरह से जान लिया है वा जानना है?

आज बापदादा बच्चों को देख रुह-रुहान कर रहे थे कि सभी बच्चों को निश्चय भी सदा है, प्यार भी है, याद की लगन भी है, सेवा का उमंग भी है। लक्ष्य भी श्रेष्ठ है। किसी से भी पूछेंगे क्या बनना है? तो सभी कहेंगे लक्ष्मी नारायण बनने वाले हैं। राम सीता कोई नहीं कहते। १६ हजार की माला भी दिल से पसन्द नहीं करते। १०८ की माला के मणके बनेंगे। यही उमंग सभी को रहता है। सेवा में, पढ़ाई में हरेक अपने को किसी से भी कम योग्य नहीं समझते हैं। फिर भी सदा एकरस स्थिति, सदा उड़ती कला की अनुभूति, सदा एक में समाये हुए, देह और देह की अल्पकाल की प्राप्तियों से सदा न्यारे, विनाशी सुध-बुध भूले हुए हो ऐसी सदा की स्थिति अनुभव करने में नम्बरवार हो जाते हैं। यह क्यों? बापदादा इसका विशेष कारण देख रहे थे। क्या कारण देखा? एक ही शब्द का कारण है।

सब कुछ जानते हैं और सब कुछ सबको प्राप्त भी है, विधि का भी ज्ञान है, सिद्धि का भी ज्ञान है। कर्म और फल दोनों का ज्ञान है। लेकिन सदा बैलेन्स में रहना नहीं आता। यह बैलेन्स की ईश्वरीय नीति समय पर निभाने नहीं आती। इसलिए हर संकल्प में, हर कर्म में बापदादा तथा सर्व श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ आशीर्वाद, ब्लैसिंग प्राप्त नहीं होती। मेहनत करनी पड़ती है। सहज सफलता अनुभव नहीं होती। किस बात का बैलेन्स भूल जाता है? एक तो याद और सेवा। याद में रह सेवा करना यह है याद और सेवा का बैलेन्स। लेकिन सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला याद किया, नहीं तो सेवा को ही याद समझना इसको कहा जाता है अनबैलेन्स। सिर्फ सेवा ही याद है और याद में ही सेवा है। यह थोड़ा-सा विधि का अन्तर सिद्धि को बदल लेता है। फिर जब रिजल्ट पूछते कि याद की परसेन्टज कैसी रही? तो क्या कहते? सेवा में इतने बिजी थे कोई भी बात याद नहीं थी। समय ही नहीं था या कहते सेवा भी बाप की ही थी, बाप तो याद ही था। लेकिन जितना सेवा में और लगन रहीं उतना ही याद की शक्तिशाली अनुभूति रहीं? जितना सेवा में स्वमान रहा उतना ही निर्माण भाव रहा? ये बैलेन्स रहा? बहुत बड़ी, बहुत अच्छी सेवा की यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन जितना स्वमान उतना निर्माण भाव रहे। करावनहार बाप ने निमित्त बन सेवा कराई। यह है निमित्त, निर्माण भाव। निमित्त बन सेवा कराई। यह है निमित्त, निर्माण भा। निमित्त बने, सेवा अच्छी हुई, वृद्धि हुई, सफलता स्वरुप बनें, यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन सिर्फ स्वमान नहीं, निर्माण भाव का भी बैलेन्स हो। यह बैलेन्स सदा ही सहज सफलता स्वरुप बना देता है। स्वमान भी जरुरी है। देह भान नहीं, स्वमान। लेकिन स्वमान और निर्माण दोनों का बैलेन्स न होने कारण स्वमान, देह अभिमान में बदल जाता है। सेवा हुई, सफलता हुई, यह खुशी तो होनी चाहिए। वह बाबा। आपने निमित्त बनाया मैंने नहीं किया, यह मैं-पन स्वमान को

देह अभिमान में ले आता है। याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले स्वमान और निर्माण का भी बैलेन्स रखते। तो समझा बैलेन्स किस बात में नीचे ऊपर होता है!

ऐसे ही जिम्मेवारी के ताजधारी होने के कारण हर कार्य में जिम्मेवारी भी पूरी निभानी है। चाहे लौकिक सो अलौकिक प्रवृत्ति है, चाहे इश्वरीय सेवा की प्रवृत्ति है। दोनों प्रवृत्ति की अपनी-अपनी जिम्मेवारी निभाने में जितना न्यारा उतना प्यारा। यह बैलेन्स हो। हर जिम्मावारी को निभाना यह भी आवश्यक है लेकिन जितनी बड़ी जिम्मेवारी उतना ही डबल लाइट। जिम्मेवारी निभाते हुए जिम्मेवारी के बोझ से न्यारे हो। इसको कहते हैं बाप का प्यारा। घबरावे नहीं क्या करूँ, बहुत जिम्मेवारी है। यह करूँ, वा नहीं। क्या करूँ, यह भी करूँ वह भी करूँ, बड़ा मुश्किल है। यह महसूसता अर्थात् बोझ है! तो डबल लाइट तो नहीं हुए ना। डबल लाइट अर्थात् न्यारा। कोई भी जिम्मेवारी के कर्म के हलचल का बोझ नहीं। इसको कहा जाता है न्यारे और प्यारे का बैलेन्स रखने वाले।

दूसरी बात:- पुरुषार्थ में चलते-चलते पुरुषार्थ से जो प्राप्ति होती उसका अनुभव करते करते बहुत प्राप्ति के नशे और खुशी में आ जाते। बस हमने पा लिया, अनुभव कर लिया। महावीर, महारथी बन गये, ज्ञानी बन गये, योगी भी बन गये। सेवाधारी भी बन गये। यह प्राप्ति बहुत अच्छी है लेकिन इस प्राप्ति के नशें में अलबेलापन भी आ जाता है। इसका कारण? ज्ञानी बने, योगी बने, सेवाधारी बने लेकिन हर कदम में उड़ती कला का अनुभव करते हो? जब तक जीना है तब तक हर कदम में उड़ती कला में उड़ना है। इस लक्ष्य से जो आज करते उसमें और नवीनता आई वा जहाँ तक पहुँचे वही सीमा सम्पूर्णता की सीमा समझ लिया? पुरुषार्थ में प्राप्ति का नशा और खुशी भी आवश्यक है लेकिन हर कदम में उन्ति वा उड़ती कला का अनुभव भी आवश्क है। अगर यह बैलेन्स नहीं रहता तो अबलेलापन, ब्लैसिंग प्राप्त करा नहीं सकता। इसलिए पुरुषार्थी जीवन में जितना पाया उसका नशा भी हो और हर कदम में उन्नति का अनुभव भी हो। इसको कहा जाता है बैलेन्स। यह बैलेन्स सदा रहे। ऐसे नहीं समझना हम तो तब जान गये। अनुभवी बन गये। बहुत अच्छी रीति चल रहे हैं। अच्छे बने हो यह तो बहुत अच्छा है लेकिन और आगे उन्नति को पाना है। ऐसे विशेष कर्म कर सर्व आत्माओं के आगे निमित्त एक्जैम्पुल बनना है। यह नहीं भूलना। समझा किन-किन बातों में बैलेन्स रखना है? इस बैलेन्स द्वारा स्वत: ही ब्लैसिंग मिलती रहती है। तो समझा नम्बर क्यों बनते हैं? कोई किस बात के बैलेन्स में कोई किस बात के बैलेन्स में अलबेले बन जाते हैं।

बाम्बे निवासी तो अलबेले नहीं हो ना? हर बात में बैलेन्स रखने वाले हो ना? बैलेन्स की कला में होशियार हो ना। बैलेन्स भी एक कला है। इस कला में सम्पन्न हो ना! बाम्बे को कहा ही जाता है – सम्पत्ति सम्पन्न देश। तो बैलेन्स की सम्पत्ति, ब्लैसिंग की सम्पत्ति में भी सम्पन्न हो ना! नरदेसावर की ब्लैसिंग है! बाम्बे वाले क्या विशेषता दिखायेंगे? बाम्बे में मल्टीमिल्यनियर्स बहुत हौ ना। तो बाम्बे वालों को ऐसी आत्माओं को यह अनुभव कराना आवश्यक है कि रुहानी अविनाशी पद्मापद्म सर्व खजानों की खानों के मालिक क्या होता है, यह उन्हों को अनुभव कराओ। यह तो सिर्फ विनाशी धन के मालिक हैं, ऐसे लोगों को इस अविनाशी खजाने का महत्व सुनाकर अविनाशी सम्पत्ति सम्पन्न बनाओ। वो महसूस करें कि यह खजाना अविनाशी श्रेष्ठ खजाना है। ऐसी सेवा कर रहे हो ना! सम्पपति वालों की नजर में यह अविनाशी सम्पत्तिवान आत्मायें श्रेष्ठ हैं, ऐसा अनुभव करें। समझज्ञ। ऐसे नहीं सोचना कि इन्हों का पार्ट तो है ही नहीं। अन्त में इन्हों के भी जागने का पार्ट है। सम्बन्ध में नहीं आयेंगे। लेकिन सम्पर्क में आयेंगे। इसलिए अब ऐसी आत्माओं को भी जगाने का समय पहुँच गया है। तो जगाओ खूब अच्छी तरह से जगाओ। क्योंकि सम्पत्ति के नशे की नींद में सोये हुए हैं। नशे वालों को बार-बार जगाना पड़ता है। एक बार सेनहीं जागते। तो अब ऐसे नशे में सोने वाली आत्माओं को अविनाशी सम्पत्ति के अनुभवों से परिचित कराओ। समझा। बाम्बे वाले तो मायाजीत हो ना! माया को समुद्र में डाल दिया ना। तले में डाला है या ऊपर-ऊपर से? अगर ऊपर कोई चीज होती है तो फर लहरों से किनारे आ जाती, तले में डाल दिया तो स्वाहा। तो माया फिर किनारे तो नहीं आ जाती है ना? बाम्बे निवासियों को हर बात में एक्जैम्पुल बनना है। हर विशेषता में एक्जैम्पुल। जैसे बाम्बे की सुन्दरता देखने के लिए सभी दूर-दूर से भी आते हैं ना! ऐसे दूर-दूर से देखने आयेंगे। हर गुण के प्रैक्टिकल स्वरुप एक्जैम्पल बनो। सरलता जीवन में देखनी हो तो इस सेन्टर में जाकर इस परिवार को देखो। सहनशीलता देखनी हो तो इस सेन्टर में इस परिवार में जाकर देखो। बैलेन्स देखना हो तो इन विशेष आत्माओं में देखो। एसी कमाल करने वाले हो ना। बाम्बे वालों को डबल रिटर्न करना है। एक जगत अम्बा माँ की पालना का और दूसरा ब्रह्मा बाप की विशेष पालना का। जगत अम्बा माँ की पालना भी बाम्बे वालों को विशेष मिली है। तो बाम्बे को इतना रिटर्न करने पड़ेगा ना। हर एक स्थान, हरेक विशेष आत्मा द्वारा बाप की माँ की विशेष आत्माओं की विशेषता दिखाई दे – इस को कहा जाता है रिटर्न करना। अच्छा – भले पधारे। बाप के घर में वा अपने घर में भले पधारे।

बाप तो सदा बच्चों को देख हर्षित होते हैं। एक-एक बच्चा विश्व का दीपक है। सिर्फ कुल का दीपक नहीं, विश्व का दीपक है। हरेक विश्व के कल्याण अर्थ निमित्त् बने हुए हैं तो विश्व के दीपक हो गये ना। वैसे तो सारा विश्व भी बेहद का कुल है। उसी नाते से बेहद कसे कुल के दीपक भी कह सकते हैं। लेकिन हद के कुल के नहीं। बेहद के कुल के दीपक कहो वा विश्व के दीपक कहो। ऐसे हा

ना। सदा जगे हुए दीपक हो ना? टिमटिमाने वाले तो नहीं! जब लाइट टिमटिमाती है तो देखने से ऑखें खराब हो जाती हैं। अच्छा नहीं लगता है ना। तो सदा जगे हुए दीपक हो ना। ऐसे दीपकों को देख बापदादा सदा हर्षित होते रहैं। समझा। अच्छा–

सदा हर कर्म में बैलेन्स रखने वाले, सदा बाप द्वारा ब्लैसिंग लेने वाले, हर कदम में उड़ती कला के अनुभव करने वाले, सदा प्यार के सागर में समाये हुए, समान स्थिति में स्थित रहने वाले, पद्मापद्म भाग्यवान श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार औन नमस्ते।

दादियों से:- सभी ताजधारी रत्न हो ना! सदा जितना बड़ा ताज उतना ही हल्के से हल्के। ऐसा ताज धारण किया है, इस ताज को धारण करके हर कर्म करते हुए भी ताजधारी रह सकते हैं। जो रत्न जड़ित ताजा होगा वह फिर भी समय प्रमाण धारण करते और उतारते हैं लेकिन यह ताज ऐसा है जो उतारने की आवश्कता ही नहीं। सोते हुए भी ताजधारी और उठते हैं तो भी ताजधारी। अनुभव है ना! ताज हल्का है ना? कोई भारी तो नहीं हैं! नाम बड़ा वजन हल्का है। सुखदाई ताज है। खुशी देने वाला ताज है। ऐसा ताजाधारी बाप बनाते हैं जो जन्म-जन्म ताज मिलता रहे। ऐसे ताजधारी बच्चों को देख बापदादा तो हर्षित होते है। बापदादा ने ताज-पोशी का दिन अभी से ही मना करके सदा की रसम का नियम बना दिया है। सतयुयग में भी ताजपोशी दिवस मनाया जायेगा। जो संगम पर ताजपोशी दिवस मनाया उसी का ही यादगार अविनाशी चलता रहेगा। स्वयं बाप साकार वतन से वानप्रस्थ हो बच्चों को ताज तख्त दे और स्वयं अव्यक्त वतन में चले। तो ताजपोशी का दिन हो गया ना! विचित्र ड्रामा है ना। अगर जाने के पहले बताते तो वन्डरफुल ड्रामा नहीं होता। ऐसा विचित्र ड्राम है जिसका चित्र नहीं खींचा जा सकता। विचित्र बाप का विचित्र पार्ट है। जिसका चित्र बुद्धि में संकल्प द्वारा भी नहीं खींच सकते इसको कहते हैं विचित्र। इसलिए विचित्र ताजपोशी हुई। बापदादा सदा महावीर बच्चों को ताजपोशी करने वाले ताजधारी स्वरुप में देखते हैं। बापदादा साथ देने में नहीं छिपे लेकिन साकार दुनिया से छिपकर अव्यक्त दुनिया में उदय हो गये। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे यह तो वायदा है ही। यह वायदा कभी छूट नहीं सकता। इसलिए तो ब्रह्मा बाप इन्त-जार कर रहे हैं। नहीं तो कर्मातीत बन गये तो जा सकते हैं। बन्धन तो नहीं है ना। लेकिन स्नेह का बन्धन है। स्नेह के बन्धन के कारण साथ चलने का वायदा निभाने के कारण बाप को इन्तजार करना ही है। साथ निभाना है और साथ चलना है। ऐसे ही अनुभव है ना। अच्छा हरेक विशेष है। विशेषता एक-एक की वर्णन करें तो कितनी होगी। माला बन जायेंगी। इसलिए दिल में ही रखते हैं, वर्णन नहीं करते। अच्छज्ञ–

पार्टियों से:- अमृतवेला सदा शक्तिशाली है। अमृतवेला शक्तिशाली है तो सारा दिन शक्तिशाली रहेगा। अमृतवेला कमजोर है तो सारा दिन कमजोर। अमृतवेले नियम प्रमाण तो नहीं बैठते हो? यह वरदानों का समय है। वरदानों के समय अगर कोई सोया रहे, सुस्ती में रहे वा विस्मृति रहे, कमजोर होकर बैठे तो वरदानों से वंचित रह जायेगा। तो अमृतवेले का महत्व सदा याद रहता है ना? उस समय नींद तो नहीं करते हो? झटके तो नहीं खाते हो ना? कभी-कभी कोई नींद की अवस्था को भी शान्ति की अवस्था सम-झते हैं। उन्हों से पूछते हैं कैसे बैठे थे तो कहते हैं बहुत शान्ति में। तो ऐसी चेकिंग करो – कभी भी शक्तिशाली स्टेज के बीच में यह माया तो नहीं आती है। जो शक्तिशाली हैं उसके आगे माया कमजोर हो जाती है।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात – युगलों से:- सदा प्रवृत्ति में रहते सइ वृत्ति में रहते हो कि हम न्यारे और सदा बाप के प्यारे हैं! यही वृत्ति सदा पृवृत्ति में रहती है? वैसे प्रवृत्ति को पर वृत्ति भी कह सकते हैं। पर माना न्यारे। प्रवृत्ति में रहते प्रवृत्ति के बन्धन से परे अर्थात् पर वृत्ति वा न्यारे और प्यारे। ऐसे बन्धनमुक्त बन प्रवृत्ति के कार्य को निभाने वाले हो ना! बन्धन में बन्धने वाले नहीं लेकिन बन्धन्मुक्त हो कर्म करने वाले। मन का भी बन्धन नहीं। एक है तन का बन्धन, दूसरा है मन का बन्धन तीसरा है सम्बन्ध का बन्धन, व्यवहार का बन्धन। तो सब बन्धनों से मुक्त। निर्बन्धन आत्मा बंध नहीं सकती। सारे बन्धन लगन की अग्नि से भस्म करने वाले। लगन अग्नि है। अग्नि में जो चीज डाले सब भस्म ऐसी बन्धनमुक्त आत्म उड़ने के सिवाए रह नहीं सकती। बन्धन फँसाता है, निर्बन्धन उड़ाता है। बन्धन का पिंजड़ा खुला तो पंछी उड़ेगा ना! कोई कितना भी गोल्डन पिंजड़ा लेकर आये उस पिंजड़ें में भी फँसने वाले नहीं। यह माया सोने का रुप धारण करके आती है। सोना माना आकर्ष्णण करने वाला। यादगार में भी दिखाते हैं सोना हिरण बनकर आई। तो सोने का हिरण अच्छा तो नहीं लगता। जब उड़ता पंछी हो गये तो सोना हो या हीरा हो लेकिन पिंजड़े के पंछी नहीं बन सकते।

अधर कुमारों से:- सदा अपने को विजय के तिलकधारी आत्मायें अनुभव करते हो? विजय का तिलक सदा लगा हुआ है? कभी मिट तो नहीं जाता? माया कभी मिटा तो नहीं देती? रोज अमृतवेले इस विजय के तिलक को स्मृति द्वारा ताजा करो तो सारा दिल विजय का तिलक लगा रहेगा। विजय का तिलक है तो राजय का, भाग्य का भी तिलक है। इसीलिए भक्त भी बहुत बड़े-बड़े तिलक लगाते हैं। तिलक भक्ति की निशानी समझते हैं। प्रभु प्यार है इसकी निशानी तिलक लगा देते हैं। आपको कितने तिलक हैं? राज्य का तिलक, भाग्य का तिलक, विजय का तिलक.... यह सब तिलक मिले हैं ना? तिलकधारी ही तख्तधारी हैं। बाप का दिलतख्त जो अभी मिला है ऐसा तख्त भविष्य में भी नहीं मिलेगा। यह बहुत श्रेष्ठ तख्त है। तख्त मिला, तिलक मिला और क्या

चाहिए?

9-5-84

सदा एक रस उड़ने और उड़ाने के गीत गाओ

ज्ञान के सागर शिवबाबा अपने ज्ञान स्वरुप, सहजयोगी बच्चों प्रति बोले:-

आज दिलाराम बाप दिलरुबा बच्चों के दिल का गीत सुन रहे थे। अमृतवेले से लेकर हर एक दिलरुबा के दिल के दिल के गीत बापदादा सुनते हैं। गीत सब गाते हैं और गीत का बोल भी सभी का एक ही है। वह है ''बाबा''। सभी बाबा बाबा के गीत गाते हैं। सभी को यह गीत आता है। दिन-रात गाते रहते हो। लेकिन बोल एक होते हुए भी हरेक के बोलने का तर्ज और साज भिन्न-भिन्न है। किसी के खुशी की साज है। किसका उड़ने और उड़ाने का साज है। और किस-किस बच्चे का अभ्यास का साज़ है। कभी बहुत अच्छा और कभी सम्पूर्ण अभ्यास न होने कारण नीचे ऊपर भी गाते हैं। एक साज में दूसरे साज़ मिक्स हो जाते हैं। जैसे यहाँ गीत के साथ जब साज़ सुनते हो तो कोई गीत वा साज़ नाचने वाला होता, कोई स्नेह में समाने वाला होता, कोई पुकार का होता, कोई प्राप्ति का होता। बापदादा के पास भी भिन्न-भिन्न प्रकार के राज़ और साज़ भरे गीत सुनाई देते हैं। कोई आज के विज्ञान की इन्वेन्शन प्रमाण आटोमेटक निरन्तर गीत गाते। स्मृति का स्विच सदा खुला हुआ है इसलिए स्वत: ही और सदा बजता रहता है। कोई जब स्विच आन करते हैं – तब साज़ बजता है। गाते सभी दिल से हैं लेकिन कोई का सदा स्वत: और एकरस है। कोई का बजाने से बजता है। लेकिन भिन्न-भिन्न साज कब कैसा, कब कैसा। बापदादा बच्चों के गीत सुन हर्षित भी होते हैं कि सभी के दिल में एक ही बाप समाया हुआ है। लगन भी एक के साथ है। सब कुछ करते भी एक बाप के प्रति है। सर्व सम्बन्ध भी एक बाप से जुट गये हैं। स्मृति में, दृष्टि में, मुख पर एक ही बाप है। बाप को अपना संसार बना दिया। हर कदम में बाप की याद से पदमों की कमाई जमा भी कर रहे हैं।

हरेक बच्चे के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य का सितारा भी चमक रहा है। ऐसी श्रेष्ठ विशेष आत्मायें विश्व के आगे एक्जैम्पल भी बन गई हैं। ताज, तिलक, तख्तनशीर भी हो गये हैं। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें जिनके गुणें के गीत स्वयं बाप गाते हैं। बाप हरेक बच्चे के नाम की माला सिमरण करते हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सभी को प्राप्त है ना! फिर गीत गाते-गाते साज़ क्यों बदलते हैं? कब प्राप्ति के, कब मेहनत के, कब पुकार के, कब दिलशिकस्त के। यह साज़ क्यों बदलते हैं? सदा एकरस उड़ने और उड़ाने के गीत क्यों गाते? ऐसे गीत गाओ जो सुनने वालों को पंख लग जाएं। और उड़ने लग जाएं। लंगड़े को टाँगे मिल जाए और नाचने लग जाए। दु:ख की शैय्या से उठ सुख के गीत गाने लगे। चिन्ता की चिता पर बैठे हुए प्राणी चिता से उठ खुशी में नाचने लगें। दिलशिकस्त आत्मायें उमंग उत्साह के गीत गाने लग जाएं। भिखारी आत्मायें सर्व खजानों से सम्पन्न् बन ''मिल गया, पाल लिया'' यह गीत गाने लग जायें। ये ही सिद्धि प्राप्त सेवा की विश्व की आवश्यकता है। आल्पकाल की सिद्धि वालों के पीछे कितने भटक रहे हैं। कितना अपना समय और धन लगा रहे हैं।

वर्तमान समय सर्व आत्मायें मेहनत से थक गई हैं, सिद्धि चाहती हैं। अल्पकाल की सिद्धि द्वारा सन्तुष्ट हो जाती है। लेकिन एक बात में सन्तुष्ट होती तो और अनेक बातें उत्पन्न होती। लंगड़ा चल पड़ता लेकिन और इच्छा उत्पन्न होती। यह भी हो जाए, यह भी हो जाए। तो वर्तमान समय के प्रमाण आप आत्माओं के सेवा की विधि ये सिद्धि स्वरुप की होनी है। अविनाशी, अलौकिक रुहानी सिद्धि वा रुहानी चमत्कार दिखाओ। यह चमत्कार कम है क्या? सारी दुनिया की ९९ प्रतिशत आत्मायें चिन्ता की चिता पर मरी पड़ी हैं। ऐसे मरे हुए को जिन्दा करो। नया जीवन दो। एक प्राप्ति की टाँग है और अनेक प्राप्तियों से लंगड़े हैं। ऐसी आत्माओं को अविनाशी सर्व प्राप्तियों की टांग दो। अन्धों को त्रिनेत्री बनाओ। तीसरा नेत्रा दो। अपने जीवन के श्रेष्ठ वर्तमान और भविष्य देखने की ऑख दो। क्या यह सिद्धि नहीं कर सकते हो! यह रुहानी चमत्कार नहीं दिखा सकते हो। भिखारी को बादशाह नहीं बना सकते हो! ऐसी सिद्धि स्वरुप सेवा की शक्तियाँ बाप द्वारा प्राप्त नहीं हैं क्या! अब विधि स्वरुप से सिद्धि स्वरुप बनो। सिद्धि स्वरुप सेवा के निमित्त बनो। विधि अर्थात् पुरुषार्थ के समय पर पुरुषार्थ किया। अब पुरुषार्थ का फल सिद्धि स्वरुप बन सिद्धि स्वरुप सेवा में विश्व के आगे प्रत्यक्ष बनो। अब यह आवाज बुलन्द हो कि विश्व में अविनाशी सिद्धि देने वाले, सिर्फ दिखाने वाले नहीं, देने वाले सिद्धि स्वरुप बनाने वाले एक ही यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। एक ही स्थान है। स्वयं तो सिद्धि स्वरुप बने हो ना!

बाम्बे में पहले यह नाम बाला करो। बार-बार मेहनत से छूटो। आज इस बात पर पुरुषार्थ की मेहनत की, आज इस बात पर मेहनत की। यह है पुरुषार्थ की मेहनत। इस मेहनत से छूट प्राप्ति स्वरुप शक्तिशाली बनना, यह है सिद्धि स्वरुप। अब सिद्धि स्वरुप ज्ञानी तू आत्मयें, योगी तू आत्मायें बनो और बनाओ। क्या अन्त तक मेहनत ही करते रहेंगे। भविष्य में प्रालब्ध पायेंगे। पुरुषार्थ का प्रत्यक्ष फल अब खाना ही है। अभी प्रत्यक्ष फल खाओ। फिर भविष्य फल खाना। भविष्य की इन्तजार में प्रत्यक्ष फल गँवा न देना। अन्त में फल मिलेगा इस दिलास पर भी नहीं रहनाह। एक करो, पदम पाओ। यह अब की बात है। कब की बात नहीं। समझा – बाम्बे वाले क्या बनेंगे? दिलासा वाले तो नहीं बनेंगे नो। सिद्धि बाबा मशहूर होते हैं। कहते हैं ना यह सिद्धि बाबा हैं, सिद्धि योगी हैं। बाम्बे

वाले भी सिद्ध सहज योगी अर्थात् सिद्धि को प्राप्त किये हुए हो ना! अच्छा–

सदा स्वत: एकरस उड़ाने के गीत गाने वाले, सदा सिद्धि स्वरुप बन अविनाशी रुहानी सिद्धि प्राप्त कराने वाले, रुहानी चमत्कार दिखाने वाले, चमत्कारी आत्मायें, सदा सर्व प्राप्तियों की सिद्धि का अनुभव कराने वाले सिद्धि स्वरुप सहजयोगी, ज्ञान स्वरुप बच्चें को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कुमारियों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. सदा रुहानी याद में रहने वाली रुहानी कुमारियाँ हो ना! देह अभिमान वाली कुमारियाँ तो बहुत हैं लेकिन आप रुहानी कुमारियॉ हो। सदा रुह अर्थात् आत्म की स्मृति में रहने वाली। आत्मा बन आत्मा को देखने वाली इसको कहते हैं रुहानी कुमारियाँ तो कौन-सी कुमारियॉ हो? कभी देह अभिमान में आने वाली नहीं। देह अभिमान में आना अर्थात् माया की तरफ गिरना। और रुहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रुहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकती। जैसे बाप सुप्रीम है, कब देह अभिमान में नहीं आता, ऐसे देह-अभिमान में आने वाले नहीं। जिनका बाप से प्यार है, वह रोज प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जात है उसमें सफलता होती है। कहने से करते तो थोड़ा समय सफलता होती। प्यार से,अ पने मन से चलने वाले सदा चलते। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या! तो एक बार के अनुभवी कभी भी धोखे में नही आ सकते। माया भिन्न-भिन्न रुप में आती है। कपड़ों के रुप में आयेगी, माँ-बाप के मोह के रुप में आयेगी, सिनेगा के रुप में आयेगी। घूमने-फिरने के रुप में आयेगी। माया कहेगी यह कुमारियाँ हमारी बनें, बाप कहेंगे हमारी बनें। तो क्या करेगी?

माया को भगाने में होशियार हो? घबराने वाली कमजोर तो नहीं हो? ऐसे तो नहीं सहेलियों के संग में सिनेमा में चली जाओगी। संग के रंग में कभी नहीं आना। सदा बहादुर, सदा अमर, सदा अविनाशी रहना। सदा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनान। गटर में नहीं गिरना। गटर शब्द ही कैसा है। बाप सागर है, सागर में सदा लहराते रहना। कुमारी जीवन में ज्ञान मिल गया, रास्ता मिल गया, मंजिल मिल गई, यह देख खुशी हाती है! बहुत भाग्यवान हो। आज के संसार की हालत देखो। दु:ख दर्द के बिना और कोई बात नहीं। गटर में गिरते हुए चोट के ऊपर चोट खाते रहते। आज का यह संसार है। सुनते हो ना – आज शादी की, कल जल मरी। आज शादी की कल घर आ गई। एक तो गटर में गिरी फिर और चोट पर चोट खाई। तो ऐसी चोट खानी है क्या? इसलिए सदा अपने को भाग्यवान आत्मा समझो। जो बाप ने बचा लिया। बच गये, बाप के बन गये, ऐसे खुशी होती है ना! बापदादा को भी खुशी होती है क्योंकि गिरने से ठोकर खाने से बच गई। तो सदा ऐसे अविनाशी रहना।

२. सभी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना? साधारण कुमारी से श्रेष्ठ कुमारी हो गई। श्रेष्ठ कुमारी सदा श्रेष्ठ कर्तव्य करने के निमित्त। ऐसे सदा अपने को अनुभव करती हो कि हम श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं! श्रेष्ठ कार्य क्या है? विश्व कल्याण। तो विश्व कल्याण करने वाली विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ हो। घर में रहने वाली कुमारियाँ नहीं। टोकरी उठाने वाली कुमारियाँ नहीं लेकिन विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ। कुमारियाँ वह जो कहते हैं कुल का कल्याण करें। सारा विश्व आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियाँ अपने हद के कुल का कल्याण करती हैं। और श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसी हो ना! कमजोर तो नहीं! डरने वाली तो नहीं! सदा बाप साथ है। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत से छूट गई। कितना फायदा हुआ। बस वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमजोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना।

३. कुमारी अर्थात् महान। पवित्र आत्मा को सदा महान आत्मा कहा जाता है। आजकल में महात्मायें भी महात्मा कैसे बनते हैं? पवित्र बनते हैं। पवित्रता के कारण ही महान आत्मा कहे जाते हैं। लेकिन आप महान आत्माओं के आगे वह कुछ भी नहीं हैं। आपकी महानता ज्ञान सहित अविनाशी महानता है। वह एक जन्म में महान बनेंगे फिर दूसरे जन्म में फिर से बनना पड़ेगा। आप जन्म-जन्म की महान आत्मायें हो। अभी की महानता से जन्म-जन्म के लिए महान हो जायेयंगी। २१ जन्म महान रहेंगी। कुछ भी हो जाए लेकिन बाप के बने तो सदा बाप के ही रहेंगे। ऐसी पक्की हो ना? कच्ची बनेंगी तो माया खा जायेगी। कच्चे को माया खाती, पक्के को नहीं। देखना – यहाँ सभी का फोटो निकल रहा है। पक्की रहना। घबराने वाली नहीं। जितना पक्का उतना खुशी का अनुभव, सर्व प्राप्तियों का अनुभव करेंगे। पक्के नहीं तो सदा की खुशी नहीं। सदा अपने को महान आत्मा समझो। महान आत्मा से कोई ऐसा साधारण कार्य हो नहीं सकता। महान आत्मा कभी किसी के आगे झुक नहीं सकती। तो माया की तरफ कभी झुकने वाली नहीं। कुमारी माना हैन्डस। कुमारियों का शक्ति बनना अर्थात् सेवा में वृद्धि होना। बाप को खुशी है कि यह होवनलार विश्व सेवाधारी विश्व का कल्याण करने वाली विशेष आत्मायें हैं।

४. कुमारियाँ चाहे छोटी हैं, चाहे बड़ी हैं लेकिन सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हैं – ऐसे समझती हो? सौ ब्राह्मणों से उत्तम

कन्या क्यों गाया जाता है? हर एक कन्या कम से कम सौ ब्राह्मण तो जरुर तैयार करेगी। इसलिए सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या कहा जाता है। सौ ते कुछ भी नहीं है, आप तो विश्व की सेवा करेंगी। सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्यायें हो। सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। एसा नशा रहता है? कालेज की, सकूल की कुमारियाँ नहीं। ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हो। कोई पूछे कौन-सी कुमारियाँ हो? तो बोले हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हैं। यह एक-एक कुमारियाँ सेवाधारी कुमारियाँ बनेंगी। कितने सेन्टर खुलेंगे। कुमारियों को देख बाप को यही खुशी रहती है कि यह सब इतने हैण्ड तैयार हो रहे हैं। राइट हैण्ड हो ना! लेफ्ट हैण्ड नहीं। लेफ्ट हैण्ड से जो काम करते हैं वह थोड़ा नीचे ऊपर हो सकता है। राइट हैण्ड से काम जल्दी और अच्छा होता है। तो इतनी सब कुमारियाँ तैयार हो जाएं तो कितने सेन्टर खुल जायेंगे, जहाँ भेजे वहाँ जायेंगी ना! जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगी ना! कुमारियाँ सब महान हो। सदा महान रहना। संग में नहीं आना। अगर काई आपके ऊपर अपना रंग लगाने चाले तो आप उस पर अपना रंग लगा देना। माँ-बाप भी बन्धन डालने चाहें तो भी बन्धन में बंधने वाली नहीं। सदा निर्बन्धन। सदा भाग्यवान। कुमारी जीवन पूज्य जीवन है। पूज्य कभी पुजारी बन नहीं कती। सदा इसी नशे में रहने वाली।

५. कुमारियों से:- सभी देवियाँ हो ना! कुमारी अर्थात् देवी। जो उल्टे रास्ते में जाती वह दासी बन जाती और जो महान आत्मा बनती वह देवियाँ हैं! दासी झुकती है। तो आप सब देवियाँ हो, दासी बनने वाली नहीं। देवियाँ को कितना पूजन होता है। तो यह पूजन आपका है ना! छोटी हो या बड़ी सब देवियाँ हो। बस यही सदा याद रखो कि हम महान आत्मायें पवित्र आत्मायें हैं बाप का बनना यह कम बात नहीं है, कहने में सहज बात हो गई है। लेकिन किसके बने हो? कितने ऊंचे बने हो? कितनी विशेष आत्मायें बने हो? यह चलते-फिरते याद रहता है कि हम कितनी महान कितनी ऊंचीह आत्मायें हैं। भाग्यवान आत्माओं को सदा अपना भाग्य यादरहे। कौन हो? देवी। देवी सदा मुस्कराती रहती है। देवी कभी रोती नहीं। देवियों के चित्रों के आगे जाओ तो क्या दिखाई देता? सदा मुस्कराती रहती है! दृष्टि से, हाथों से सदा देने वाली देवी। देवता या देवी का अर्थ ही है देने वाला। क्या देने वाली हो? सभी को सुख शान्ति आनन्द, प्रेम सर्व खजाने देने वाली देवियाँ हो। सभी राइट हैण्ड हो। राइट हैण्ड अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने वाली।

माताओं से:- सभी मातायें, जगत मातायें हो गई ना! जगत का उद्धार करने वाली जगत मातायें। हद के गृहस्थी की मातायें नहीं। सदा विश्व कल्याणकारी। जैसे बाप विश्व कल्याण्कारी है वैसे बच्चे भी विश्व कल्याणकारी। तो घर में रहती हो या विश्व की सेवा के स्थान पर रहती। विश्व ही आपकी सेवा का स्थान है। बेहद में रहने वाली, हद में रहने वाली नहीं। ज्यादा समय किसमें जाता है, हद की प्रवृत्ति में या बेहद में? जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगी तो हद के बन्धनों से सहज मुक्त होती जायेंगी। जो अभी संकल्प आता है कि समय नहीं मिलता इच्छा है लेकिन शरीर नहीं चलता, शक्ति नहीं है... यह सब बन्धन है। जब दृढ़ संकल्प कर लेते कि बेहद की सेवा में आना ही है, लगना ही है तो यह बन्धन सेकण्ड में समाप्त हो जाते हैं। समय स्वत: मिल जायेगा। शरीर आपे ही चलने लग जायेगा। यह अनुभव है हभ और भी कर सकती हो। श्रेष्ठ कार्य के लिए समय न मिले, शरीर काम न करे यह हो नहीं सकता। पहिये लग जायेंगे। जब उमंग उत्साह के पहिये लग जाते हैं तो न चलने वाले भी चलने लग पड़ते हैं। बीमारी भी खत्म हो जाती है। जैसे लौकिक में कोई आवश्यक काम करना होता है तो क्या करते हो? उतना समय बीमारी भाग जाती है ना। बाद में भले ही सो जाओ लेकिन उस समय मजबूरी से भी करती हो ना! तो जैसे हद के कार्य में न चाहते भी चल पड़ते, ऐसे यहाँ भी खुशी-खुशी से चल पड़ेंगे। जब मजबूरी के पहिये भी चला सकते हैं तो यह खुशी के पहिये क्या नहीं कर सकते। तो उमंग उत्साह और खुशी के पहिये लगाकर यह हद के बन्धन काटो। पति का बन्धन, बच्चों का बन्धन तो खत्म हुआ अभी इन सूक्ष्म बन्धनों से भी मुक्त बनो। उड़ो और उड़ाओ। यह ऐसा है, वह ऐसा है.. यह भी रस्सी है। इसको भी तोड़ो यह भी नीचे ले आती है। तो बन्धनमुक्त उड़ते पंछी बनो।

२. माताओं को विशेष कौन सा खजाना मिला है? खुशी का खजाना मिला है ना! यह खजाना बाप ने विशेष माताओं के लिए लाया है। उसी खुशी के खजाने से खेलते रहो। बांटते रहो। यही काम है। घर का काम करते भी खुशी का धन बांटते रहो। तो घेर का काम भी ऐसे होगा जैसे खेल रहे हैं। खेल में थकना नहीं होता। तो सदा ऐसे आगे बढ़ते रहो। साधारण मातायें नहीं हो शिव शक्तियाँ हो। शक्तियाँ अर्थात् संघारनी, विजयी। विजय का झण्डा लहराने वाली। विश्व में बाप को प्रत्यक्ष करने वाली। प्रवृत्ति को सम्भालते हुए सदा बेहद का नशा रहे कि हम असुर संघारनी शिव शक्तियाँ हैं।

माताओं के लिए तो स्वयं बाप सृष्टि पर आये हैं। ऐसी खुशी है ना – कि हमने बुलाया और बाप को आना पड़ा। क्यों? माताओं ने दु:ख के कारण दिल से पुकारा और ऐसी पुकारने वाली माताओं को बाप ने पूज्य बना दिया। पुकार करने से छुड़ा दिया। अभी पुकारने की जरुरत नहीं। सब आशायें पूर्ण हो गई। बाप मिला सब कुछ मिला। सदा इसी खुशी में रहते खुशी का दान देती रहो। अपने हमजिन्स पर रहम करो। आपके हमजिन्स कितने दु:खी हैं। हमजिन्स को जगाना यही माताओं का काम है। जग हैं जगाने के लिए। अभी से रहमदिल बन जगाओ नहीं तो आपकी हमजिन्स आपको उल्हना देंगी कि हमें क्यों नहीं जगाया। अच्छा–

11-5-84

ब्राह्मणों के हर कदम, संकल्प, कर्म से विधान का निर्माण

विधाता, वरदाता बापदादा मास्टर विधाता, वरदाता बच्चों प्रति बोले:-

विश्व रचता अपने नये विश्व के निर्माण करने वाले नए विश्व की तकदीर बच्चों को देख रहे हैं। आप श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों की तकदीर विश्व की तकदीर है। नये विश्व के आधार स्वरुप श्रेष्ठ बच्चे हो। नये विश्व के राज्य भाग्य के अधिकारी विशेष आत्मायें हो। आपकी नई जीवन विश्व का नव निर्माण करती हैं। विश्व को श्रेष्ठाचारी सुखी शान्त सम्पन्न बनाना ही है, आप सबके इस श्रेष्ठ दृढ़ संकल्प की अंगुली से कलहयुगी दु:खी संसार बदल सुखी संसार बन जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान बाप की श्रीमत प्रमाण सहयोगी बने हो। इसलिए बाप के साथ आप सबका सहयोग, श्रेष्ठ योग विश्व परिवर्तन कर लेता है। आप श्रेष्ठ आत्माओं का इस समय का सहजयोगी राजयोगी जीवन का हर कदम, हर कर्म नये विश्व का विधान बन जाता है। ब्राह्मणों की विधि सदा के लिए विधान बन जाती है। इसलिए दाता के बच्चे दाता, विधाता और विधि विधाता बन जाते हैं। आज लास्ट जन्म तक भी आप दाता के बच्चों के चित्रों द्वारा भक्त लोग मांगते ही रहते हैं। ऐसे विधि विधाता बन जाते जो अब तक भी चीफ जस्टिस भी सभी को कसम उठाने के समय ईश्वर का या ईष्ट देव का स्मृति स्वरुप बनाए कसम उठवाते हैं। लास्ट जन्म में भी विधान में शक्ति आप विधि विधाता बच्चों की चल रही है। अपना सकम नही उठाते। बाप का आपका महत्व रखते हैं। सदा वरदानी स्वरुप भी आप हो। भिन्न-भिन्न वरदान, भिन्न-भिन्न देवताओं और देवियों द्वारा आपके चित्रों द्वारा ही मांगते हैं। कोई शक्ति का देवता है कोई विद्या की देवी है। वरदानी स्वरुप आप बने हो तब अभी तक भी परमपरा भक्ति की आदि से चलती रही है। सदा बापदादा द्वारा सर्व प्राप्ति स्वरुप प्रसन्नचित्त प्रसन्ता स्वरुप बने हो तो अब तक भी अपने को प्रसन्न करने के लिए देवी देवताओं को प्रसन्न करते हैं कि ये ही हमें सदा के लिए प्रसन्न करेंगे। सबसे बड़े ते बड़ा खजाना सन्तुष्टता का बाप द्वारा आप सबने प्राप्त किया है। इसलिए सन्तुष्टता लेने के लिए सन्तोषी देवी की पूजा करते रहते हैं। सभी सन्तुष्ट आत्मायें सन्तोषी माँ हो ना। सब सन्तोषी हो ना! आप सभी सन्तुष्ट आत्मायें सन्तोषी मूर्त हो। बापदादा द्वारा सफलता जन्म सिद्ध अधिकार रुप में प्राप्त की है इसलिए सफलता का दान, वरदान आपके चित्रों से मांगते हैं। सिर्फ अल्प बुद्धि होने के कारण, निर्बल आत्मायें होने के कारण भिखारी आत्मायें होने के कारण अल्पकाल की सफलता ही मांगते हैं। जैसे भिखारी कभी भी यह नहीं कहेंगे कि हजार रुपया दो। इतना ही कहेंगे कुछ पैसे दे दो। रुपया, दो दे दो। ऐसे यह आत्मायें भी सुख-शान्ति पवित्रता की भिखारी अल्पकाल के लिए सफलता मांगेंगी। बस यह मेरा कार्य हो जाए। इसमें सफल्ता हो जाए। लेकिन मांगते आप सफलता स्वरुप आत्माओं से ही हैं। आप दिलाराम बाप के बच्चे दिलवाला बाप को सभी दिल का हाल सुनाते हो, दिल की बातें करते हो। जो किसी आत्मा से नहीं कर सकते वह बाप से करते हो। सच्चे बाप के सच्चे बच्चे बनते हो। अब भी आपके चित्रों के आगे सब दिल का हाल बोलते रहरते हैं। जो भी अपनी कोई छिपाने वाली बात होगी, सबके स्नेही सम्बन्धी से छिपायेंगे लेकिन देवी देवताओं से नहीं छिपायेंगे। दुनिया के आगे कहेंगे मैं यह हूँ, सच्चा हूँ, महान हूँ। लेकिन देवताओं के आगे क्या कहेंगे? जो हूँ वह यही हूँ। कामी भी हूँ तो कपटी भी हूँ। तो ऐसे नये विश्व की तकदीर हो। हर एक की तकदीर में पावन विश्व का राज्य भाग्य है।

ऐसे विधाता वरदाता, विधि विधाता सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। हरेक के श्रेष्ठ मत रुपी हाथों में स्वर्ग के स्वराज्य का गोला है। ये ही माखन है। राज्य भाग्य का माखन है। हरेक के सिर पर पवित्रता की महानता का, लाइट का क्राउन है। दिलतख्तनशीन हो। स्वराज्य के तिलकधारी हो। तो समझा मैं कौन? मैं कौन की पहेली हल करने आये हो ना? पहले दिन का पाठ यह पढ़ा ना। मैं कौन? मैं यह नहीं हूँ और मैं यह हूँ। इसी में ही सारा ज्ञान सागर का ज्ञान समाया हुआ है। सब जान गये हो ना। यही रुहानी नशा सदा साथ रहे। इतनी श्रेष्ठ आत्मायें हो। इतनी महान हो। हर कदम, हर संकल्प, हर कर्म यादगार बन रहा है। विधान बन रहा है। इसी श्रेष्ठ स्मृति से उठाओ। समझा। सारे विश्व की नजर आप आत्माओं की तरफ है। जो मैं करूँगा वो विश्व के लिए विधान और यादगार बनेगा। मैं हलचल में आऊंगी तो दुनिया हलचल में आयेगी। मैं सन्तुष्टता प्रसन्नता में रहूँगी, तो दुनिया सन्तुष्ट और प्रसन्न बनेगी। इतनी जिम्मेवारी हर विश्व नव निर्माण के निमित्त् आत्माओं की है। लेकिन जितनी बड़ी है उतनी हल्की है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप साथ है। अच्छा–

ऐसे सदा प्रसन्नचित्त आत्माओं को, सदा मास्टर विधाता, वरदाता बच्चों को, सदा सर्व प्राप्ति स्वरुप सन्तुष्ट आत्माओ को, सदा याद द्वारा हर कर्म का यादगार बनाने वाली पूज्य महान आत्माओं को विधाता वरदाता बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कुमारों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. सभी श्रेष्ठ कुमार हो ना? साधारण कुमार नहीं, श्रेष्ठ कुमार। तन की शक्ति, मन की शक्ति सब श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले। कोई भी शक्ति विनाशी कार्य में लगाने वाले नहीं। विकारी कार्य है विनाशकारी कार्य और श्रेष्ठ कार्य है ईश्वरीय कार्य। तो सर्व शक्तियों को ईश्वरीय कार्य में लगाने वाले श्रेष्ठ कुमार। कहाँ व्यर्थ के खाते में तो कोई शक्ति नहीं लगाते हो? अभी अपनी शक्तियों को कहाँ लगाना है यह समझ मिल गई। इसी समझ द्वारा सदा श्रेष्ठ कार्य करो। ऐसे श्रेष्ठ कार्य में सदा रहने वाले श्रेष्ठ

प्राप्ति के अधिकारी बन जाते हैं। ऐसे अधिकारी हो? अनुभव करते हो कि श्रेष्ठ प्राप्ति हो रही है? या होनी है? हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो रही है या अनुभव है ना? जिसकी एक कदम में पदमों की कमाई जमा हो वह कितने श्रेष्ठ हुए। जिसकी इतनी जमा सम्पत्ति हो उसको कितनी खुशी होगी! आजकल के लखपति, करोड़पति को भी विनाशी खुशी रहती हौ आपकी अविनाशी प्रापर्टी है। श्रेष्ठ कुमार की परिभाषा समझते हो? सदा हर शक्ति श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले। व्यर्थ खाता सदा के लिए समाप्त हुआ श्रेष्ठ खाता जमा हुआ? या दोनों चलता है? एक खत्म हुआ। अभी दोनों चलाने का समय नहीं है। अभी वह सदा के लिए खत्म। दोनों होगे तो जितना जमा होना चाहिए उतना नहीं होगा। गँवाया नही, जमा हुआ तो कितना जमा होगा! तो व्यर्थ खाता समाप्त हुआ, समर्थ खाता जमा हुआ।

२. कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन है। कुमार जीवन में जो चाहे वह कर सकते हो। चाहे अपने को श्रेष्ठ बनायें चाहे अपने को नीचे गिरायें। यह कुमार जीवन ही ऊंचा या नीचा होने वाली है। ऐसी जीवन में आप बाप के बन गये। विनाशी जीवन के साथी हैं कर्मबन्धन में बंधने के बजाए सच्चा जीवन का साथी ले लिया। कितने भाग्यवान हो! अभी आये तो अकेले आये या कम्बाइन्ड होकर आये? (कम्बाइन्ड) टिकेट तो नहीं खर्च की ना? तो यह भी बचत हो गई। वैसे अगर शरीर के साथी को लाते तो टिकेट खर्च करते, उनका सामान भी उठाना पड़ता और कमाकर रोज खिलाना भी पड़ता। यह साथी तो खाता भी नहीं सिर्फ वासना लेते हैं। रोटी कर्म नहीं हो जाती और ही शक्ति भर जाती है। तो बिना खर्चा, बिना मेहनत के और साथी भी अविनाशी, सहयोग भी पूरा मिलता है। मेहनत नहीं लेते और सहयोग देते हैं। कोई मुश्किल कार्य आये, याद किया और सहयोग मिला। ऐसे अनुभवी हो ना! जब भक्तों को भी भक्ति का फल देने वाले हैं तो जो जीवन का साथी बनने वाले हैं उनको साथ नहीं देंगे? कुमार कम्बाइन्ट तो बने लेकिन इस कम्बाइन्ड में बेफिकर बादशाह बन गये। कोई झंझट नहीं, बेफिकर हैं। आज बच्चा बीमार हुआ, आज बच्चा स्कूल नहीं गया... या कोई बोझ नहीं। सदा निर्बन्धन। एक के बन्धन में बंधने से अनेक बन्धनों से छूट गये। खाओ पियो मौज करो और क्या काम। अपने हाथ से बनाया और खाया। जो चाहो वह खाओ। स्वतन्त्र हो। कितने श्रेष्ठ बन गये। दुनिया के हिसाब से भी अच्छे हो। समझते हो ना कि दुनिया के झंझटों से बच गये। आत्मा की बात छोड़ो, शरीर के कर्म बन्धन के हिसाब से भी बच गये। ऐसे सेफ हो। कभी दिल तो नहीं होती कि कोई ज्ञानी साथी बना दें? कोई कुमारी का कल्याण कर दें? ऐसी दिल होती है? यह कल्याण नहीं है – अकल्याण है। क्यों? एक बन्धन बंधा और अनेक बन्धन शुरु हुए। यह एक बन्धन अनेक बन्धन पैदा करता। इसलिए मदद नहीं मिलेगी। बोझ होगा। देखने में मदद है लेकिन है अनेक तनों का बोझ। जितना बोझ कहो उतना बोझ है। तो अनेक बोझ से बच गये। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचना। नहीं तो ऐसा बोझ अनुभव करेंगे जो उठना ही मुश्किल। स्वतन्त्र रहकर बन्धन में बंधे तो पद-मगुणा बोझ होगा। वह अनजान से बिचारे बंध गये आप जानबूझकर बंधेंगे तो और पश्चाताब का बोझ होगा। कोई कच्चा तो नहीं है? कच्चे की गति नहीं होती। न यहाँ का रहता न वहाँ का रहता। आपकी तो सद्गति हो गई है ना। सद्गति माना श्रेष्ठ गति। थोड़ा संकल्प आता हैं? फोटो निकल रहा है। अगर कुछ नीचे ऊपर किया तो फोटो आयेगा। जितने पक्के बनेंगे उतना वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ है।

३. सभी समर्थ कुमार हो ना! समर्थ हो? सदा समर्थ आत्मायें जो भी संकल्प करेंगी, जो भी बोल बोलेंगी, कर्म करेंगी वह समर्थ होगा। समर्थ का अर्थ ही है व्यर्थ को समाप्त करने वाले। व्यर्थ का खाता समाप्त और समर्थ का खाता सदा जमा करने वाले। कभी व्यर्थ तो नहीं चलता। व्यर्थ संकल्प या व्यर्थ बोल या व्यर्थ समय। अगर सेकण्ड भी गया तो कितना गया। संगम पर सेकण्ड कितना बड़ा है। सेकण्ड नहीं लेकिन एक सेकण्ड एक जन्म के बराबर है। एक सेकण्ड नहीं गया एक जन्म गया। ऐसे महत्व को जानने वाले समर्थ आत्मायें हो ना। सदा यह स्मृति रहे कि हम समर्थ बाप के बच्चे हैं, समर्थ आत्मायें हैं। समर्थ कार्य के निमित्त हैं। तो सदा ही उड़ती कला का अनुभव करते रहेंगे। कमजोर उड़ नहीं सकते। समर्थ सदा उड़ते रहेंगे। तो कौन सी कला वाले हो? उड़ती कला या चढ़ती कला? चढ़ने में सांस फूल जाता है। थकते भी हैं, साँस भी फूलता है। और उड़ती कला वाले सेकण्ड में मंजिल पर सफलता स्वरुप बने। चढ़ती कला है तो जरुर थकेंगे, साँस भी फूलेगा – क्या करें, केसे करें, यह साँस फूलता है। उड़ती कला में सबसे पार हो जाते। टचिंग आती है कि यह करें, यह हुआ ही पड़ा है। तो सेकण्ड में सफलता की मंजिल को पाने वाले इसको कहा जाता है समर्थ आत्मा। बाप को खुशी होती है कि सभी उड़ती कला वाले बच्चे हैं, मेहनत क्यों करें। बाप तो कहेंगे बच्चे मेहनत से बचे रहें। जब बाप रास्ता दिखा रहा है – डबल लाइट बना रहा है तो फिर नीचे क्यों आ जाते हो? क्या होगा, कैसे होगा यह बोझ है। सदा कल्याण होगा, सदा श्रेष्ठ होगा, सदा सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है, इस स्मृति से चलो।

४. कुमारों को पेपरे देने के लिए युद्ध करनी पड़ती है। पवित्र बनना है, यह संकल्प किया तो माया युद्ध करना शुरु कर देती है। कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है। महान आत्मायें हैं। अभी कुमारों को कमाल करके दिखानी है। सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है – बाप के समान बन बाप के साथी बनाना। जैसे आप स्यवं बाप के साथी बने हो ऐसे औरों को भी साथी बनाना है। माया के साथियों को बाप के साथी बनाना है – ऐसे सेवाधारी। अपने वरदानी स्वरुप से शुभ भावना और शुभ कामना से बाप का बनाना है। इसी विधि द्वारा

सदा सिद्धि को प्राप्त करना है। जहाँ श्रेष्ठ विधि है वहाँ सिद्धि जरुर है। कुमार अर्थात् सदा अचल। हलचल में आने वाले नहीं। अचल आत्मायें औरों को भी अचल बनाती हैं।

५. सभी विजयी कुमार हो ना? जहाँ बाप साथ है वहाँ सदा विजय है। सदा बाप के साथ के आधार से कोई भी कार्य करेंगे तो मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा अनुभव होगी। बाप से थोड़ा सा भी किनारा किया तो मेहनत ज्यादा प्राप्ति कम। तो मेहनत से छूटने का साधन है – बाप का हर सेकण्ड हर संकल्प में साथ हो। इस साथ से सफलता हुई पड़ी है। ऐसे बाप के साथी हो ना? जो बाप की आज्ञा है उस आज्ञा के प्रमाण कदम हों। बाप के कदम के पीछे कदम हो। यहाँ कदम रखें या न रखें, राइट है या रांग है। यह सोचने की भी जरुरत नहीं। नया कोई रास्ता हो तो सोचना भी पड़े। लेकिन जब कदम पर कदम रखना है तो सोचने की बात नहीं। सदा बाप के कदम पर कदम रख चलते चलो। तो मंजिल समीप ही है। बाप कितना सहज करके देते हैं – श्रीमत ही कदम है। श्रीमत के कदम पर कदम रखो। तो मेहनत से सदा छूटें रहेंगे। सर्व सफलता अधिकार के रुप में होगी। छोटे कुमार भी बहुत सेवा कर सकते हैं। कभी भी मस्ती नहीं करना, आप की चलन, बोल चाल ऐसा हो जो सब पूछें कि यह किस स्कूल में पढ़ने वाले हैं। तो सेवा हो जायेगी ना। अच्छा–

युगलों के ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात:-

१. एक मत के पट्टे पर चलने वाले तो फास्ट रफ्तर वाले होंगे ना! दोनों की मत एक, यह एक मत ही पहिया है। एक मत के पहियों के आधार पर चलने वाले सदा तीव्रगति से चलते हैं। दोनों ही पहिये श्रेष्ठ पहिये हैं। एक ढीला एक तेज तो नहीं हो ना? दोनों पहिये एकरस। तीव्र पुरुषार्थ में पाण्डव नम्बरवन हैं या शक्तियाँ? एक दो को आगे बढ़ाना अर्थात् स्वयं आगे बढ़ना। ऐसे नहीं आगे बढ़ाकर खुद पीछे हो जाएं। आगे बढ़ाना स्वयं आगे बढ़ना। सभी लकी आत्मायें हो ना? दिल्ली और बाम्बे निवासी विशेष लकी हैं – क्योंकि रास्ते चलते भी बहुत खजाना मिलता है। विशेष आत्माओं का संग, सहयोग, शिक्षा सब प्राप्त होता है। यह भी वरदान है जो बिना निमन्त्रण के मिलता रहता है। दूसरे लोग कितनी मेहनत करनते हैं। सारे ब्राह्मण जीवन में या सेवा की जीवन में ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें दो-तीन बारी भी कहाँ पर मुश्किल पहुँचते हैं लेकिन आप बुलाओ, न बुलाओ, आपके पास सहज ही पहुँच जाते हैं। तो संग का रंग जो प्रसिद्ध है, विशेष आत्माओं का संग भी उमंग दिलाता है। कितना सहज भाग्य प्राप्त करने वाली भाग्यवान आत्मायें हो। सदा गीत गाते रहो वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। जो प्राप्ति हो रही है उसका रिटर्न है सदा उड़ती कला। रुकने और चलने वाले नहीं। सदा उड़ने वाले।

२. सदा अपने को बाप की छत्रछाया के अन्दर रहने वाले अनुभव करते हो? बाप की याद छत्रछाया है। जो छत्रछाया के अन्दर रहते वह सदा सफ रहते हैं। कभी बरसात या तूफान आता तो छत्रछाया के अन्दर चले जाते हैं। ऐसे बाप की याद छत्रछाया है। छत्रछाया में रहने वाले सहज ही मायाजीत हैं। याद को भूला अर्थात् छत्रछाया से बाहर निकला। बाप की याद सदा साथ रहे। जो ऐसे छत्रछाया में रहने वाले हैं उन्हें बाप का सहयोग सदा मिलता रहता है। हर शक्ति की प्राप्ति का सहयोग सदा मिलता रहता है। कभी कमजोर होकर माया से हार नहीं खा सकते। कभी माया याद भुला तो नहीं देती है। ६३ जन्म भूलते रहे, संगमयुग है याद में रहने का युग। इस समय भूलना नहीं। भूलने से ठोकर खाई, दु:ख मिला। अभी फिर कैसे भूलेंगे। अभी सदा याद में रहने वाले।

३. सदा अपने विशेष पार्ट को देख हर्षित रहते हो? ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी हो। विशेष पार्टधारी का हर कर्म स्वत: ही विशेष होगा क्योंकि स्मृति में है कि मैं विशेष पार्टधारी हूँ। जैसे स्मृति वैसी स्थिति स्वत: बन जाती है।

हर कर्म, हर बोल विशेष। साधारणता समाप्त हुई। विशेष पार्टधारी सभी को स्वत: आकर्षित करते हैं। सदा इस स्मृति में रहो कि हमारे इस विशेष पार्ट द्वारा अनेक आत्मायें अपनी विशेषता को जानेंगी। किसी भी विशेष आत्मा को देख स्वयं भी विशेष बनने का उमंग आता है। कहाँ भी रहो, कितने भी मायावी वायुमण्डल में रहो लेकिन विशेष आत्म हर स्थान पर विशेष दिखाई दे। जैसे हीरा मिट्टी के अन्दर भी चमकता दिखाई देता। हीरा, हीरा ही रहता है। ऐसे कैसा भी वातावरण हो लेकिन विशेष आत्मा सदा ही अपनी विशेषता से आकर्षित करेगी। सदा याद रखना कि हम विशेष युग की विशेष आत्मायें हैं।

विदाई के समय:-

संगमयुग है ही मिलने का युग। जितना मिलेंगे उतना और मिलने की आशा बढ़ेगी। और मिलने की शुभ आशा होनी भी चाहिए। क्योंकि यह मिलने की शुभ आशा ही माया जीत बना देती है। यह मिलने का शुभ संकल्प सदा बाप की याद स्वत: दिलाता है। यह तो होनी ही चाहिए। यह पूरी हो जायेगी। तो संगम पूर हो जायेगा। और सब इच्छायें पूरी हुई लेकिन याद में सदा समाये रहें, यह शुभ इच्छा आगे बढ़ायेगी। ऐसे है ना! तो सदा मिलन मेला होता ही रहेगा। चाहे व्यक्त द्वारा चाहे अव्यक्त् द्वारा। सदा साथ ही रहते हैं फिर मिलने की आवश्कता ही क्या! हर मिलन का अपना-अपना स्वरुप और प्राप्ति है। अव्यक्त मिलन अपना और साकार मिलन अपना। मिलना तो अच्छा ही है। अच्छा– सदा शुभ और श्रेष्ठ प्रभात रहेगी। वह तो सिर्फ गुडमार्निंग करते लेकिन यहाँ शुभ भी है और श्रेष्ठ भी है। हर सेकण्ड शुभ और श्रेष्ठ इसलिए सेकण्ड-सेकण्ड की मुबारक हो। अच्छा। **ओम् शान्ति।**